KPT
KUMAWAT
PRAGATI TRUST

2 गज दूरी
मास्क जरूरी

मासिक

कुमावत इंडिया

कुमावत प्रगति ट्रस्ट की सामाजिक पत्रिका

Email : kumawatindiapatrika@gmail.com
website: www.kumawatindiapatrika.com

वर्ष-4 | अंक-12 अगस्त-2021 पृष्ठ-32 मूल्य : ₹ 20.00

हरियाली
तीज
की
शुभकामनाएँ

स्व. श्री बृजराज जी आर्य (राहोरिया) के आशीर्वाद से

श्री नरेन्द्र आर्य एवं विरल विरोश आर्य ब्यावर के

नवीन प्रतिष्ठान

विरल पेट्रोलियम

नयारा (एस.आर. पम्प)

कॉलेज रोड, पानी की टंकी के पास, ब्यावर, जिला अजमेर (राजस्थान)

सम्बन्धित फर्म

- विरल बृज लीला गार्डन
- स्काई डांस एकेडमी
- जिम एवं योगा क्लासेज

मो. 8107944493 नरेन्द्र, 9352411106 विरल

कुमावत प्रगति ट्रस्ट

पता : एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018

मुख्य संरक्षक	:	सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा)	मो. 9414994006
अध्यक्ष	:	रमेश कुमावत (गेदर)	मो. 9414554322
उपाध्यक्ष	:	रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट	मो. 9887440666
सचिव	:	श्रीमती भारती तोंदवाल	मो. 9414810584
कोषाध्यक्ष	:	लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल	मो. 9549656438
सदस्य ट्रस्टी	:	सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल)	मो. 9829056063
		हेमचन्द खड़गटा	मो. 9351682036
		मनोज सिरस्वा	मो. 9414043127
		रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)	मो. 9414074376
		जयकिशन सोकिल	मो. 9829125428
चेतन बालोदिया	:	चेतन बालोदिया	मो. 9414052736
सलाहकार	:	गिरधारी लाल सिंघनवाल	मो. 9414263429

सम्पादक मण्डल : रामप्रकाश कुमावत (मारवाल) सम्पादक - 9414074376, श्रीमती भारती वर्मा सह-सम्पादक 9414810584, गौरव अजमेरा 9829488824, प्रमोद कुण्डलवाल 9414362169 **पदेन सदस्य :** अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

व्यवस्थापक मण्डल : महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, चन्द्र प्रकाश अजमेरा 9928088815, लालचन्द धुंधारिया 9413335998, सुरेन्द्र मारोठिया 9314820385, राजेश धुंधारिया 9314506330, राजेश कुमावत (मरोडिया) 9829097496, श्रीमती राजबाला बिर्थला 7976475370, प्रभुदयाल तुनगरिया किशनगढ़ 9680931428 एवं खेमचंद खड़गटा 9829140629

पत्रिका सहयोगी :

छत्तीसगढ़ : रमेश कुमार तुनवाल **मो. 9425234397** **दिल्ली :** राधेश्याम घासोलिया **मो. 9818711580** **सूरत :** शुभकरण किरोड़ीवाल **मो. 9898097444** **वापी :** कृष्णगोपाल **मो. 9824892299** **मुम्बई :** विजय किरोड़ीवाल, **मो. 9867177188** **जींद (हरियाणा) :** बलवीर सिंह वर्मा **मो. 9355322301** **कोटा :** चन्द्र प्रकाश कांकर **मो. 9214983402** **सीकर :** रामगोपाल भोड़ीवाल **मो. 9610784657** **उदयपुर :** घनश्याम पटवा **मो. 9460913044,** दयाशंकर रावड़िया **मो. 9414391034** **ब्यावर :** नरेन्द्र आर्य **मो. 8107944493** **किशनगढ़ :** नन्दकिशोर पारमवाल **मो. 9667090499** **बगरू :** चेनसुख बड़ीवाल **मो. 9929012957** **सांगानेर :** सोहनलाल अजमेरा **मो. 9636860812** **इंदौर :** नेमीचंद कारवाल **मो. 9993998645** **प्रोसेसिंग व मुद्रक :** राज ब्लॉक्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर

सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ठ संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000, 10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-600

विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर 1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700

नोट 1 : संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ठ संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10 वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

नोट 2. 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। 6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562 यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385

यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया व्हाट्सएप नं. 9549656438 पर सूचित अवश्य करें।

स्वत्वाधिकार : कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी.एम. कुमावत द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से प्रकाशित सम्पादक राम प्रकाश कुमावत (मारवाल)

सम्पादकीय

कोरोना का प्रभाव कम हुआ है कृपया कोरोना गाइडलाइन का पालन करना न भूले।

ईश्वर द्वारा मनुष्य को 'समय' के रूप में बहुमूल्य उपहार दिया गया है, इसका सदुपयोग करके मनचाही संपदा अर्जित की जा सकती हैं। महापुरुषों ने हर पल का सार्थक नियोजन कर अपने लक्ष्य को अर्जित किया है। यदि समय का योजनाबद्ध तरीके से उपयोग करें तो बेरोजगारी, निर्धनता, गृह क्लेश, नीरसता ओर अवसाद से मुक्ति पायी जा सकती है। हमें प्राथमिकता व लक्ष्य तय करना चाहिए, साथ ही कार्यों की निरंतरता व नियमितता भी सुनिश्चित कर समय का श्रेष्ठतम उपयोग करना चाहिए, इससे सफलता मिलना निश्चित है। इसके अभाव में व्यक्ति व्यर्थ के कार्यों में उलझा रहता है और जीवन 'दीवार घड़ी के पेंडुलम' की भांति इधर-उधर चलायमान रहता है, लेकिन पहुंचता कहीं नहीं है। घर के बड़े सदस्यों के सवेरे जल्दी उठने के साथ-साथ उनके द्वारा किये गए नियमित दैनिक कार्यों को देखकर तरुण एवं बाल सदस्यों को प्रेरणा मिलती है। उन्हें हम प्यार व प्रेम से समय का महत्व समझाते हुए जल्दी उठने तथा रात्रि में समय पर सोने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। जरूरत से ज्यादा लाड- प्यार उन्हें अपने लक्ष्य से भटका सकता है। विद्यार्थी समय-सारणी बना कर हर विषय की पढ़ाई करें। कार्य कठिन या बहुत बड़ा हो तो उसे छोटे-छोटे हिस्सों में बांटकर सरल बनाया जा सकता है। साथ ही एक कार्य में थकने पर दूसरा रुचिकर कार्य हाथ में लिया जा सकता है।

आधुनिक युग में स्मार्टफोन जीवन का एक आवश्यक अंग बन गया है इसका सीमित व उचित उपयोग करना चाहिए। आजकल ऑनलाइन क्लास के कारण बच्चों के पास भी स्मार्टफोन है । कृपया देखे, कि बच्चे ऑनलाइन गेम्स आदि में समय बर्बाद इसका गलत उपयोग न करें। प्राय: घर की अधिकांश महिलाएं गपशप में समय बर्बाद कर देती है। आवश्यक एवं महत्वपूर्ण समाचार, विचार एवं शिष्टाचार के विनिमय के पश्चात अपने कार्य में लग जाए। क्योंकि दिनचर्या बिगड़ने पर आवश्यक कार्य छूट जाते है तथा जीवन असंतुलित हो जाता है तथा हड़बड़ी में तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है। आलस्य-प्रमाद एवं दीर्घसूत्रता को प्रश्रय नहीं देवें। सतत लक्ष्य की ओर कदम बढ़ातें रहे। आज का काम कल पर न टालें।

अपने बच्चों और परिवार के सदस्यों से अत्यधिक आशा व अपेक्षा न लगाएं क्योंकि ये पूरी न होने से हताशा, ग्लानि एवं निराशा होने का डर रहता है। परिवार में आपस में तालमेल रखना चाहिए यह जिम्मेदारी मुखिया, उसकी पत्नी तथा परिवार की सभी महिलाओं की होती है, एक दूसरे के प्रति सकारात्मक सोच रखें। छोटी-मोटी गलती को नजरअंदाज कर देना चाहिए। छोटी सी बात को मुद्दा नहीं बनाना चाहिए, इसका समय पर हल करें नहीं तो वो मुद्दा 'राई से पहाड़' बन जाता है तथा निवारण की सीमा से बाहर हो जाता है।

नव-युगल छोटी सी गलती को भी मुद्दा बना लेते हैं। समय पर हल नहीं होने के कारण उनमें विद्रोह की भावनाएं भड़क जाती है। इस तरह की भावनाओं/विचारों को उनके परिवारजन, मित्र सहेलियां उसको हल करने के बजाय और अधिक भड़काने के लिए 'आग में घी डालने' का काम करते है। वर्तमान में हमारे समाज में भी तलाक के मामले बढ़ रहे हैं। मेरा यह मानना है कि समाज की समझदार महिलाएं एक ग्रुप की संरचना करें व निस्वार्थ भावनाओं से सेवाएं देवे जो शादी के पश्चात नवविवाहित दंपतियों पर 1 वर्ष तक निगरानी (मॉनिटरिंग) रखे अथवा कार्यशाला का आयोजन करके उन्हें वैवाहिक व सामाजिक जीवन में सामंजस्य के बारे में बताये कि किस तरह परिवार में घुलमिल कर रहना है। इसी प्रकार यदि कोई समस्या हो तो उसका समाधान कैसे करना चाहिए ? हमारे समाज में सेवाएं देने के लिए अनेक शिक्षित व बुद्धिजीवी महिलाएं आगे आ सकती हैं किंतु उचित व गतिशील प्लेटफार्म नहीं होने के कारण वे ऐसा नही कर पा रही हैं। समाजसेवा के पुण्य कार्य कर रही महिलाओं के लिए सामाजिक संस्थाएं उचित प्लेटफार्म बनाने में सहयोग दे तो इससे महिलाओं की अनेक समस्याओं का निराकरण शीघ्र हो सकता है।

- रामप्रकाश कुमावत (मारवाल)

हमारी वेवबसाइट www.kumawatindiapatrika.com पर आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पिछले अंक व अन्य विवरण देख सकते हैं।

सम्पादकीय	3
संरक्षक : श्री चेतन बालोदिया	4
विज्ञापन : बधाई	4
कुमावत गौरव : डॉ. महेश कुमावत	5
विकास कुमावत की कर्नल पद पर पदोन्नति	5
तीज पर विशेष : सावन के महीने में भगवान शिव को जल क्यो चढ़ाया जाता है	6
विधायक जोराराम कुमावत का कुमावत छात्रावास में जोरदार स्वागत	6
ऑनलाइन योग प्रतियोगिता का परिणाम घोषित	7
रोचक जानकारी	7
नियमितता से ही मिलती है सफलता : अकिंचन	7
पाठक प्रतिक्रिया	8
पद्मश्री स्व. रामप्रकाश गहलोत के बारे में और तथ्य	8
RAS-2021 की भर्ती विज्ञप्ति जारी	8
RJS की भर्ती हेतु विज्ञप्ति जारी	8
विभिन्न संस्थानों में नई भर्तियां-2021 हेतु आवेदन आमंत्रित	9
वैवाहिक विवादों के हल के लिए समाज स्तर पर एडवोकेट्स की पहल	10
एक रोचक प्रसंग - जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि	10
जल सेना विद्रोह (मुम्बई)	11
भारत-पाक बंटवारे की सच्चाई.. !	12
अश्लीलता का समाज पर दुष्परिणाम	13
बढ़ती उम्र को स्वीकारें	14
महिला मंडल, मंदसौर द्वारा पर्यावर संवर्द्धन	15
किरोड़ीवाल अध्यक्ष व दुबलदिया बने सचिव	15
24वीं बार रक्तदान कर इंसानियत की मिशाल पेश	15
मदन सिंह जी बाबरवाल सहवृत पार्षद का सम्मान	16
नेमीचंद कुमावत ने दिया ईमानदारी का परिचय	16
कुमावत समाज के 16 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे	17
कुमावत समाज निमाज का 11वां सामूहिक विवाह सम्मेलन सम्पन्न	17
एकता को पीएचडी	17
आयुषी कुमावत का आरएएस-2018 में चयन	17
गुरु के रहिये दास	18
सावन बरखा	18
भोजन कैसे करें ?	19
परिवार एक कवच है, इसके अभिन्न अंग बने रहें	19
राजस्थान में विशेष योग्यजन कल्याणार्थ संचालित प्रमुख योजनायें	20
''मुख्यमंत्री आपकी बेटी, हमारी बेटी'' योजना	21
आटा-साटा	21
हर्ष सतसई	22
श्रीमद् भागवत पुराण	23
विशिष्ठ संरक्षक	24
श्रद्धांजलि	24
विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची	25
'कुमावत इंडिया' पत्रिकानहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें	26
चित्रकार महेश कुमावत राज्य कला पुरस्कार से सम्मानित	27
तहसीलदार चोरमा ने की अपने परिसर में सपुाई	27
श्रद्धांजलि विज्ञापन	28
श्रद्धांजलि विज्ञापन	29
वधाई विज्ञापन	30

संरक्षक

श्री चेतन बालोदिया

26, विश्वकर्मा नगर, महारानी फार्म,
दुर्गापुरा, जयपुर-302015 मो. 9414052736

श्री चेतन बालोदिया एवं श्री विनोद बालोदिया दोनों भ्राताओं ने चौड़ा रास्ता जयपुर में राज ब्लॉक्स के नाम से 31 दिसम्बर, 1975 को प्रिंटिंग एवं ब्लॉक्स का कार्य प्रारम्भ किया। आपके व्यवहार एवं कार्यकुशलता के कारण शीघ्र ही प्रिंटिंग व्यवसाय के क्षेत्र में फर्म की राजस्थान में पहचान बन गई। तत्पश्चात् जयपुर के 22 गोदाम व नन्दपुरी में राज प्रिन्टलाईन के नाम से नई फर्म में भी कार्य प्रारम्भ किया। आपके मृदु व्यवहार एवं गुणवत्तापूर्ण कार्य से दोनों फर्में कुशलतापूर्वक संचालित हो रही हैं। साथ ही समाज में अलग पहचान है। आपके पुत्र श्री रवि तथा श्री सुनील (पुत्र स्व. श्री विनोद बालोदिया) भी इन संस्थानों का कार्य बखुबी संभाल रहे हैं। आप द्वारा समाज के व्यक्तियों एवं संस्थाओं के कार्यों को प्राथमिकता, गुणवत्ता तथा उचित मूल्यों पर किया जाता है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका आपके तथा आपके व्यवसाय के उज्जवल भविष्य की कामना करती है।

आयूषी कुमावत
के
RAS-2018
में चयनित होने पर
हार्दिक बधाई

विज्ञापन

शुभेच्छु

दादा-दादी : स्व. महावीर प्रसाद राजोरिया-हरिद्वारी देवी, माता-पिता : राजेश कुमार वर्मा (से.नि. सहा. लेखाधिकारी-I)-उर्मिला वर्मा, ताऊजी व चाचाजी : महेश कुमार राजोरिया (से.नि. अजमेर विश्वविद्यालय), गोविन्द सिंह, विनोद कुमार, सुरेन्द्र वर्मा (सहा. प्रबन्धक आरएफसी), विजेन्द्र कुमार (व.लि. ESI), बहिन-जीजाजी : रजनी (व.अ.)-इन्द्र चंद कुमावत (सहायक आचार्य Law), इति (अध्यापिका)-जय प्रकाश कुमावत (Kent R.O.), प्रियंका (सहा. लेखाधिकारी-II JVVNL)-विकास कुमावत (Manager Pvt. Bank), प्रीति (क. लेखाकार)-हेमन्त बालोदिया (Sr. Manager Accenture), नाना-नानी : स्व. दुर्गालाल वर्मा (से.नि. सहा. कुलसचिव राज. विश्वविद्यालय)-उमराव देवी, मामा : डॉ. राजेश कुमार वर्मा, ज्योति कुमावत

एम-81, 6 डी, इंजीनियर्स कॉलेनी, मान्यावास, मानसरोवर, जयपुर

डा. महेश कुमावत, MD (Dermatology)

डा. महेश कुमावत का जन्म 11 अप्रैल 1979 में ग्राम-गोवटी, तहसील दांतारामगढ़ में श्री मक्खनलाल कुमावत (घोडेला) के परिवार में हुआ। इनका परिवार निम्न-मध्यम वर्ग एक किसान/कारीगर परिवार था। आपके पिता स्व. श्री मक्खन लाल जी परिवार के पहले व्यक्ति थे जो राज्य सेवा में आये तथा राजस्थान रोड़वेज में बस कन्डक्टर की नौकरी शुरू की। आपके तीन भाई व एक बहिन है तथा आप उनमें सबसे बड़े है। आपकी प्राथमिक शिक्षा ग्राम गोवटी में हुई। इसके बाद नवोदय विद्यालय में प्रवेश के लिये रोजाना 3 कि.मी. पैदल जाकर एक शिक्षक से ट्यूशन लिया तथा सफल रहें। तत्पश्चात नवोदय विद्यालय, पाटन से आपने उच्च माध्यमिक स्तर तक शिक्षा ग्रहण की। कक्षा 10वीं में 82 प्रतिशत तथा कक्षा 12वीं में 79 प्रतिशत अंको के साथ स्कुल में दोनों बार दुसरा स्थान अर्जित किया। इस कारण रोड़वेज के कर्मचारियों को मिलने वाले 5000 रूपये के पुरस्कार के लिये भी चयन हुआ। अब आपने डाक्टर बनने का सपना देखा तथा परिवार से बातचीत कर सहमति ली। इसके बाद आपने सीकर में आकर एक छोटा सा कमरा किराये पर लेकर PMTकी तैयारी की तथा प्रथम प्रयास में ही सफल रहें। इस दौरान साप्ताहिक रूप से गांव जाकर पारिवारिक खेती में हाथ बंटाते रहे। यद्यपि इस दौरान आर्थिक तंगी रही परन्तु आपने हिम्मत नही हारी।

PMT में सफलता के बाद आपने सरदार पटेल मेडीकल कॉलेज, बीकानेर से MBBS उत्तीर्ण की तथा परिवार में डाक्टर बनने के सपने को साकार किया। इसके बाद पोस्ट ग्रेजुऐशन के लिये प्रवेश परीक्षा दी तथा प्रथम बार में ही सफल रहे। आपने पोस्ट ग्रेजुऐशन NHL Municipal Medical College, अहमदाबाद से चर्म रोग विभाग से की। तत्पश्चात आपने All India Institute of Medical Science, New Delhi से 3 वर्ष सीनियर रेजीडेन्सी प्रोग्राम का जॉब किया। इस दौरान आपका विवाह जयपुर के प्रमुख बडीवाल परिवार की लड़की पारस MA (English), MBA से हो गया। दिल्ली से जॉब पुर्ण कर आने पर जयपुर में निजी क्लीनिक खोला, आपकी योग्यता के कारण शीघ्र ही अच्छी तादाद में मरीज आने लगे थे किन्तु आपको दुबई से जॉब का प्रस्ताव मिलने पर आप दुबई चले गये। वहां कार्य करने से पूर्व एक बार में ही आवश्यक मेडीकल परीक्षा उत्तीर्ण कर वहां 'चर्म रोग एवं बाल प्रत्यारोपण विशेषज्ञ' के रूप में सेवा देना प्रारम्भ कर दिया। वहां से आपको 1.25 करोड़ रूपये का वार्षिक पैकेज मिला है। आपकी एक 9 वर्षीय पुत्री एवं 6 वर्षीय पुत्र है जो दुबई में आपके साथ है जिनकी परवरिश बड़े अच्छे से कर रहे है।

आपको दुबई के अस्पताल ने चर्म रोग पर होने वाली अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनारों में भेजा गया है, जहां से आपने हर बार इस क्षेत्र में नवीन जानकारियां हासिल कर मरीजों को लाभ पहुंचाया है। आप अपने परिवार एवं रिश्तेदारों से बहुत लगाव रखते है तथा उनकी मदद कर उन्हें आगे बढ़ाने के लिये प्रयासरत रहते है। आप ईमानदार, मेहनती, अनुशासित तथा अपने चिकित्सीय क्षेत्र में विशेष प्रतिभा के धनी है। आपने विदेश में रहते हुये कुमावत समाज को गौरांवित किया है, हमें आप पर गर्व है।

'कुमावत इण्डिया' पत्रिका आपके निरन्तर प्रगति करने तथा आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

विकास कुमावत की कर्नल पद पर पदोन्नति

ग्राम मारोठ के नावां उपखण्ड जिला नागौर के विकास कुमावत भारतीय थल सेना में कर्नल पद पर पदोन्नति हुई है। आप वर्तमान में LOC भारत-चीन सीमा पर देश की सुरक्षा में तैनात हैं। आपके पिता भागचन्द कुमावत भी भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हैं तथा आपके छोटे भाई वैभव कुमावत नौसेनिक कमाण्डर के रूप में भारतीय जल सेना में सेवारत हैं। इस प्रकार आपके परिवार के सदस्य राष्ट्र की सुरक्षा में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं जो कुमावत समाज के लिए गौरव की बात है। श्री रामेश्वरलाल कुमावत जो आपके दादा भी हैं वे अपने समय के प्रसिद्ध चित्रकार थे तथा मारोठ घराने की चित्रकारी के लिए प्रख्यात थे। अनेक जैन तीर्थ स्थलों एवं मंदिरों में सोने-चांदी के वर्क तथा कांच की जड़ाई का कार्य बड़ी ही निपुणता के साथ करते थे।

विकास कुमावत की पदोन्नति पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

सावन के महीने में भगवान शिव को जल क्यों चढ़ाया जाता है?

पौराणिक कथाओं की मान्यतानुसार सावन माह में भगवान शिव पृथ्वी पर अवतरित हुए थे और वह इस माह में अपने ससुराल गए थे जब अपने ससुराल गए थे तब उनका जलाभिषेक किया गया था तब से ऐसा माना जाता है कि सावन के महीने में भगवान शिव पृथ्वी पर अवतरित होते हैं और यह महीना भगवान शिव को प्रसन्न करने का एक उत्तम महीना माना जाता है। पृथ्वी का वातावरण शिव शक्ति और शिव की भक्ति से ओत-प्रोत होता है। हिन्दू धर्म में ऐसा माना गया है कि सावन के माह में शिव की भक्ति करने से शिव जल्दी प्रसन्न हो जाते हैं और हमारे दुखों का निवारण करते हैं इस महीने में भगवान शिव के मंदिरों में भक्तों की भीड़ उमड़ती है और भक्त बड़े प्रेम भाव से शिव की पूजा-अर्चना करते हैं और उन पर जल चढ़ाते हैं। इस माह में कावड़ियें कई किलोमीटर दूर से गंगाजल भरकर लाते हैं और भगवान शिव पर गंगाजल को चढ़ा कर उनको प्रसन्न करते हैं भगवान शिव को जल क्यों चढ़ाया जाता है और इसके चढ़ाने का क्या महत्व है इस के संदर्भ में अनेक पौराणिक कथाएँ प्रचलित है-

प्रथम पौराणिक कथानुसार- अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र मंथन किया गया था। इसमें देवताओं और दानवों ने मिलकर समुद्र मंथन किया था ऐसा माना जाता है कि जब समुद्र मंथन किया गया था तब सावन माह था। समुद्र मंथन करने पर सबसे पहले विष प्रकट हुआ विष प्रकट होते ही पृथ्वी पर भूचाल आ गया वातावरण दूषित होने लगा और पशु पक्षी मरने लगे यह विष इतना ज्यादा प्रभावशाली था कि यह पृथ्वी पर जीवन समाप्त करने लगा ऐसा देखकर भगवान शिव ने इस विष को अपने कंठ में ग्रहण कर लिया तभी से भगवान शिव को नीलकंठ बोला जाने लगा। जब भगवान शिव ने यह विष अपने कंठ में ग्रहण किया तब उनके शरीर में बहुत ज्यादा गर्मी पैदा हो गई और उनका शरीर लाल पढ़ने लगा ऐसा देखकर देवताओं ने भगवान शिव पर जल की वर्षा कर दी और कुछ देवताओं ने भगवान शिव को शांत करने के लिए जल चढ़ाया जिससे भगवान शिव बहुत ज्यादा प्रसन्न हुए तब से ऐसा माना जाता है कि भगवान शिव को जल चढ़ाने से भगवान शिव प्रसन्न होते हैं। द्वितीय पौराणिक कथानुसार- हमारे शास्त्रों में ऐसा बताया गया है कि भगवान विष्णु सावन के महीने में योग निंद्रा में जाते हैं भगवान विष्णु के योग निंद्रा में जाने के पश्चात इस सृष्टि का संचालन करने के लिए भगवान शिव इसका उत्तरदायित्व अपने हाथों में ले लेते हैं इसलिए इस महीने में भगवान शिव की पूजा-अर्चना बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है और यह महीना ''भगवान शिव का माह'' के नाम से जाना जाता है। तृतीय पौराणिक कथानुसार-शिव पुराण में बताया गया है कि भगवान शिव स्वयं ही जल का रूप है इसलिए भगवान शिव को जल से अभिषेक करना बहुत ही अच्छा और फलदाई माना जाता। चतुर्थ पौराणिक कथानुसार-ऐसा माना जाता है कि मरकंडू ऋषि के पुत्र मारकण्डेय ने अपनी लंबी आयु प्राप्त करने के लिए सावन महीने में भगवान शिव की घोर तपस्या की और भगवान शिव प्रसन्न होकर उन्होंने उस को वरदान दिया। पंचम पौराणिक कथानुसार-पुरानी कथाओं की मान्यता के अनुसार सावन माह में भगवान शिव पृथ्वी पर अवतरित हुए थे और वह इस माह में अपनी ससुराल गए थे जब अपनी ससुराल गए थे तब उनका जलाभिषेक किया गया था शेष पृष्ठ 12 पर ...

विधायक जोराराम कुमावत का कुमावत छात्रावास में जोरदार स्वागत

भादरा में 21 जुलाई को होने वाले धर्मशाला शिलान्यास समारोह में शामिल होने जा रहे सुमेरपुर के विधायक जोराराम कुमावत का स्थानीय कुमावत छात्रावास में समाज के प्रबुद्धजनों को ओर से कुमावत छात्रावास ट्रस्ट, सीकर के अध्यक्ष राधेश्याम काम्या के नेतृत्व में जोरदार स्वागत किया गया।

सुमेरपुर (पाली) के विधायक जोराराम कुमावत, माटीकला बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष पूर्व विधायक हरीश कुमावत, प्रदेश कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य एडवोकेट सुरेंद्र लाम्बा का कुमावत छात्रावास प्रांगण में स्वागत किया गया। स्वागत समारोह में ट्रस्ट के अध्यक्ष राधेश्याम काम्या, कोषाध्यक्ष सीताराम भोडिवाल, सहमंत्री सूरजमल धुवरिया, शिक्षाविद गुलजारीलाल भाटीवाल, पूर्व मंत्री राजेन्द्र पारमुवाल, जानकीलाल मारवाल, एडवोकेट नवरंगलाल बिंवाल व होस्टल प्रभारी पप्पूराम भोडिवाल सहित अनेक समाजबन्धुओं ने स्वागत किया। इस अवसर पर जोराराम कुमावत ने सामाजिक चेतना जगाने का आह्वान किया साथ ही कुमावत छात्रावास के शिक्षा जगत किए जा रहे योगदान की प्रशंसा की, सामाजिक व राजनीतिक भूमिका पर विस्तार से चर्चा की तथा छात्रावास परिसर का अवलोकन करके हरीश कुमावत व राधेश्याम काम्या के साथ छात्रावास में पांच पौधे भी लगाए।

नियमितता से ही मिलती है सफलता : अकिंचन

हरिनाम संकीर्तन परिवार की ओर से तीन दिवसीय 'हनुमंत कथा' अजमेर रोड के जयसिंहपुरा स्थित जीवन विहार में शुरू हुई। व्यासपीठ से अकिंचन महाराज ने व्यास पूजन और गणेश पूजन के साथ पहले दिन की कथा का श्रवण करवाया। **'नासै रोग हरे सब पीरा जपत निरंतर हनुमत बलबीरा'** चौपाई की व्याख्यान करते हुए उन्होंने कहा कि अगर कोई इंसान हनुमान चालीसा का पाठ रोजाना नियमित रूप से और मन से करता है

उसे सभी रोगों व कष्टों से छुटकारा मिल जाता है। तन-मन की पीड़ा शांत हो जाती है। उन्होंने कहा कि यह सब नियमितता से ही होगा।

आज लोग पूजा-पाठ-जप तो करते हैं मगर उनमें नियमितता नहीं है। उनकी दिनचर्या भी अस्त-व्यस्त है। नियमितता होगी तो मन और चित शांत होगा। निरंतरता और नियमितता से सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त हो सकती है। हनुमान जी महाराज शारीरिक ही नहीं सभी तरह के रोगों का शमन करते हैं।

ऑनलाइन योग प्रतियोगिता का परिणाम घोषित

टीम चेतन धुंधारिया द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आयोजित ऑनलाइन योग प्रतियोगिता का परिणाम 25 जून को फेसबुक पर लाईव घोषित किया गया। टीम चेतन धुंधारिया के प्रवक्ता जयसिंह गुडीवाल ने बताया कि प्रतियोगिता 4 आयु वर्गों में आयोजित की गई थी। पूरे भारतवर्ष से कुल 363 प्रविष्टियां प्राप्त हुई। जिसमें जयपुर के प्रतिभागियों ने बाजी मारी। विभिन्न आयु वर्गों में विजेता निम्न प्रकार रहे-

केटेगिरी-ए (0 से 9 वर्ष) : प्रथम स्नेहा कुमावत, ऋत्विक कुमावत और वंशिका कुमावत द्वितीय रही।

केटेगिरी-बी (9 वर्ष से अधिक 15 वर्ष तक) : प्रथम तेजल वर्मा और द्वितीय प्रियांश कुमावत रहे।

केटेगिरी-सी (15 वर्ष से अधिक 30 वर्ष तक) : पारस कुमावत और सुरेन्द्र कुमावत (दोनों प्रथम) रहे व गीता कुमावत और मनस्वी कुमावत द्वितीय रहे।

केटेगिरी-डी के विजेता (30 वर्ष से अधिक) : सुरेन्द्र कुमावत, निशा कुमावत (दोनों प्रथम) व हंसराज कुमावत (द्वितीय) रहे।

टीम चेतन धुंधारिया के संस्थापक चेतन धुंधारिया ने कहा कि समाज योग के प्रति काफी संजीदा है। पूरे भारतवर्ष से समाजबंधुओं का योग के प्रति काफी अच्छा रूझान देखने को मिला। 'पहला सुख निरोगी काया व स्वस्थ समाज' की कामना व योग प्रति लोगों की रुचि जागृत करने के उद्देश्य से इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। धुंधारिया ने सभी समाजबंधुओं व पूरी टीम को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम संयोजक विजय कारगवाल व प्रवक्ता जयसिंह गुडीवाल ने दिन रात प्रयास कर प्रतियोगिता में अपनी महती भूमिका निभाई है। 21 जून, 2021 को टीम चेतन धुंधारिया ने रेणु विला फार्म हाउस में कुमावत इंडिया पत्रिका के ट्रस्टियों को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित कर योग कार्यक्रम रखा था, जिसका प्रकाशन कुमावत इंडिरूा पत्रिका के पिछले अंक में हुआ है।

रोचक जानकारी

पांच वस्तु ऐसी हैं,जो अपवित्र होते हुए भी पवित्र है....

उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं, वमनं शवकर्पटम् ।
काकविष्ठा ते पञ्चैते, पवित्राति मनोहरा॥

1. उच्छिष्ट — गाय का दूध ।

गाय का दूध पहले उसका बछडा पीकर उच्छिष्ट करता है। फिर भी वह पवित्र और शिव पर चढता है ।

2. शिव निर्माल्यं - गंगा का जल

गंगा जी अवतरित होकर स्वर्ग से सीधी शिव जी के मस्तक पर आई नियमानुसार शिव जी पर चढायी हुई हर चीज़ निर्माल्य है पर गंगाजल पवित्र है।

3. वमन—उल्टी — शहद..

मधुमख्खी जब फूलो का रस ले कर अपने छल्ले पे आती है, तब वो अपने मुख से उसे निकालती है, जिससे शहद बनता है, जो पवित्र कार्यो मे लिया जाता है।

4. शव कर्पट— रेशमी वस्त्र

धार्मिक कार्यो को संपादित करने के लिये पवित्रता की आवश्यकता रहती है, रेशमी वस्त्र को पवित्र माना गया है, पर रेशम को बनाने के लिये रेशम के कीड़े को उबलते पानी में डाला जाता है, और उसकी मौत हो जाती है उसके बाद रेशम मिलता है तो हुआ शव कर्पट फिर भी पवित्र है ।

5. काक विष्ठा— कौए का मल

कौवा पीपल वगेरह पेड़ों के फल खाता है, ओर उन पेड़ों के बीज अपनी विष्ठा मे इधर उधर छोड देता है, जिससे पेड़ों की उत्पत्ति होती है। आपने देखा होगा की कही भी पीपल के पेड़ उगते नही है बल्कि पीपल काक विष्ठा से उगता है, फिर भी पवित्र है.. !

कोरोना योद्धाओं का किया सम्मान

रामपुरा-डाबड़ी कस्बे के राजकीय प्राथमिक केन्द्र के कर्मचारियों का कोरोना योद्धाओं के तौर पर काम करने पर भट्टों की गली ग्राम पंचायत की खजूर वाली ढाणी में सरपंच सजना चौधरी की अध्यक्षता व व्यवसायी सीएम बड़ीवाल के मुख्य आतिथ्य में सम्मान किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि रमेशचंद्र गैदर व एडवोकेट राम प्रकाश कुमावत तथा बोदूराम चौपड़ा थे। कार्यक्रम में डीईओ राहुल कुमावत, लैब टेक्नीशियर अनिल कुमार गौड़, एएनएम संजू कुमारी, प्रियंका यादव, रुचि यादव, संजू कुमारी, नर्सिंग अधिकारी मुरलीधर डागर को सम्मानित किया गया। शेरूराम कुमावत ने भट्टों की गली स्वास्थ्य केन्द्र के लिए पंखा दिया। भामाशाह सीएम बड़ीवाल कुमावत ने बीपी जांचने के लिए यंत्र तथा अन्य चिकित्सा समग्री दी।

- 'कुमावत इंडिया' मासिक पत्रिका के जून 2021 के अंक में श्रीमती भारती तोंदवाल द्वारा '**करें अपना परिमार्जन**' लेख शिक्षाप्रद होने के साथ उनका प्रकृति प्रेम व दूरदर्शिता को दर्शित करता है। पर्यावरण प्रदूषण के कारण आज सांस लेना मुश्किल हो गया है। कोरोना दूसरी लहर ने बता भी दिया है कि ऑक्सीजन की कीमत क्या है? पर्यावरण बचाने की दिशा में हम सभी को एकजुट होकर सोचना व अमल करना होगा अन्यथा वो समय दूर नहीं जब हमें महीनों तक अपने घरों में कैद रहना पड़ सकता है। आज के परिवेश में ऐसी शिक्षा नीति की आवश्यकता है जो जल संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, वन्य जीव संरक्षण एवं वायु प्रदूषण की शिक्षा दे सके। मैं उम्मीद करता हूँ कि पत्रिका भविष्य में भी इस प्रकार ज्ञानवर्द्धक लेख प्रकाशित करती रहेगी। नि:सन्देह इस प्रकार के लेखों से लोगों को प्रेरणा मिलेगी और लोग पर्यावरण के प्रति जागृत होंगे।

  -**जयसिंह गुडीवाल,** वरिष्ठ उपाध्यक्ष, कुमावत क्षत्रिय विकास समिति, बरकत नगर, जयपुर मो. 9461343432

- पत्रिका के जून 2021 के अंक में प्रकाशित '**समाज सेवा: एक अतुल्य सेवा**' आलेख जो कि उर्वशी बालोदिया द्वारा लिखा गया था पढ़ा, यह सारगर्भित और सराहनीय था। कोई भी व्यक्ति या संस्था जो समाज हित में कार्य कर रही है हमें उसे प्रोत्साहित करना चाहिए। जिससे ऐसी संस्थाओं और व्यक्तियों का उत्साहवर्धन हो सके। सभी सामाजिक संस्थाओं, सामाजिक व्यक्तियों को जो समाज सेवा में लगे हुए हैं उनको एक मंच पर आकर कार्य करना चाहिए। टीम चेतन धुंधारिया द्वारा समाज में ऐसी मिसाल पेश की गई है जिससे समाज में नई चेतना जागृत हुई है।

  निश्चित रूप से ऐसे लेखों से समाज में और जागृति आएगी।

  - **राकेश कुमार कुमावत,** एडवोकेट राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर, मो. नं. 98291-52561

पद्मश्री स्व. रामप्रकाश गहलोत के बारे में और तथ्य

श्री सुरेन्द्र कुमार नागा वरिष्ठ समाज सेवी एवं श्री गहलोत के दामाद ने बताया कि श्री रामप्रकाश गहलोत ने 23 वर्ष जयपुर स्टेट में आर्किटेक्ट की गरिमामय नौकरी की थी। इस दौरान जयपुर परकोटे में चौड़ा रास्ता में न्यू गेट उनके द्वारा ही डिजाइन कर बनवाया गया था जिसकी शान बेजोड़ है। एक लेखक ने लिखा है कि इस गेट को छोटा बना देने के कारण उन्हें स्टेट सर्विस से हटा दिया गया। ऐसा कथन सत्य से परे हैं। वास्तविकता यह है कि वर्ष 1947 में उनके ऊपर एक नए अधिकारी को पदस्थापित कर दिए जाने से उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया था, ऐसा एक स्वाभिमानी व्यक्ति ही कर सकता है। पाठकों से निवेदन है कि पद्मश्री स्व. रामप्रकाश गहलोत के पिछले अंक में प्रकाशित लेख के साथ इस तथ्य को जोड़कर पढ़ें।

RAS-2021 की भर्ती विज्ञप्ति जारी

RAS-2021 के लिए 20 जुलाई, 2021 को राजस्थान लोक सेवा आयोग अजमेर द्वारा 988 पदों के लिए भर्ती का विज्ञापन जारी किया है जिसके लिए ऑनलाइन आवेदन 28 जुलाई से 27 अगस्त तक आमंत्रित किए गए हैं। 40 वर्ष तक के अभ्यार्थी आवेदन के पात्र हैं। प्रारम्भिक परीक्षा वस्तुनिष्ठ रूप से ऑनलाईन/ऑफलाइन ली जाएगी। उक्त पदों के लिए आयोग की वेबसाइट https//rpsc.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध ऑनलाइन आवेदन पत्र भरने के संबंध में दिशा निर्देश देखकर ही आवेदित करें। ऑनलाईन आवेदन के लिए आयोग के ऑनलाईन पोर्टल पर अथवा https//sso.rajasthan.gov.in पर लॉगइन कर Citizen App (G2C) में उपलब्ध रिक्रूटमेंट पोर्टल का चयन करें। अधिक जानकारी के लिए आयोग की द्वारा जारी विज्ञापन को अवश्य देखें।

RJS की भर्ती हेतु विज्ञप्ति जारी

राजस्थान उच्च न्यायालय, जोधपुर ने सिविल न्यायाधीश संवर्ग प्रतियोगिता परीक्षा 2021 हेतु 120 पदों की विज्ञप्ति जारी की है। विधि स्नातक (व्यावसायिक) ही आवेदन के लिए पात्र है। आवेदन पत्र ऑनलाइन जमा करने की तिथि 30 जुलाई 2021 से 31 अगस्त 2021 है। अधिक जानकारी के लिए कृपया विज्ञप्ति देखे। राजस्थान उच्च न्यायालय की वेबसाइट www.hcraj.nic.in है।

विभिन्न संस्थानों में नई भतियां-2021 हेतु आवेदन आमंत्रित

संकलनकर्ता मनीष कुमावत, सांगानेर

क्र. सं.	विभाग का नाम	पद का नाम	पदों की संख्या	वेतनमान/लेवल	अधिकतम आयु	योग्यता	अंतिम तिथि	वेबसाईट का पता	अन्य
1.	रक्षा मंत्रालय, सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा महानिदेशालय, भारत सरकार	स्टेनेग्राफर ग्रेड–2	1	लेवल–4	30	12वीं	09 अगस्त 2021	www.indianarmy.nic.in	उम्मीदवार अपने आवेदन को केवल हस्तलेखित रजिस्टर्ड/साधारण डाक द्वारा ही प्रेषित करेंगे।
2.	रक्षा मंत्रालय, सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा महानिदेशालय, भारत सरकार	अपर श्रेंणी लिपिक	3	लेवल–2	30	12वीं	09 अगस्त 2021	www.indianarmy.nic.in	
3.	रक्षा मंत्रालय, सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा महानिदेशालय, भारत सरकार	बहुकार्य स्टाफ	21	लेवल–1	30	10वीं	09 अगस्त 2021	www.indianarmy.nic.in	
4.	केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, मैसूरू	कनिष्ठ सहायक	9	लेवल–2	30	12वीं	30 जुलाई 2021	www.cftri.res.in	ऑनलाईन आवेदन के पश्चात् एक प्रति सीएफटीआरआई कार्यालय को 23 अगस्त 2021 तक प्रेषित करें।
5.	केन्द्रीय खाद्य प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, मैसूरू	कनिष्ठ आशुलिपिक	3	लेवल–2	30	12वीं	30 जुलाई 2021	www.cftri.res.in	
6.	ऑयल इंडिया लिमिटेड	कनिष्ठ सहायक	120	लेवल–2	33	12वीं एवं कम्प्यूटर अनुप्रयोग में प्रमाणपत्र	15 अगस्त 2021	https://register.cbtexams.in/OIL/Recruitment/Applicant/Register	केवल ऑनलाईन आवेदन करें।
7.	केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूडकी	कनिष्ठ सहायक	8	लेवल–2	31	12वीं	07 अगस्त 2021	http://recruitment.cbri.res.in	केवल ऑनलाईन आवेदन करें।
8.	केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रूडकी	कनिष्ठ आशुलिपिक	3	लेवल–2	30	12वीं	07 अगस्त 2021	http://recruitment.cbri.res.in	केवल ऑनलाईन आवेदन करें।
9.	केन्द्रीय काँच एवं सिरामिक अनुसंधान संस्थान, कोलकाता	कनिष्ठ सहायक	13	लेवल–2	31	12वीं	15 अगस्त 2021	http://www.cgcri.res.in	केवल ऑनलाईन आवेदन करें।
10.	केन्द्रीय काँच एवं सिरामिक अनुसंधान संस्थान, कोलकाता	कनिष्ठ आशुलिपिक	5	लेवल–4	30	12वीं	15 अगस्त 2021	http://www.cgcri.res.in	केवल ऑनलाईन आवेदन करें।
11.	राट्रीय परीक्षा बोर्ड, आयुर्विज्ञान, भारत सरकार	वरि ष्ठ सहायक	8	लेवल–7	30	स्नातक	14 अगस्त 2021	https://www.natboard.edu.in/	परीक्षा तिथि – 20 सितम्बर 2021
12.	राट्रीय परीक्षा बोर्ड, आयुर्विज्ञान, भारत सरकार	कनि ष्ठ सहायक	30	लेवल–2	30	12वीं	14 अगस्त 2021	https://www.natboard.edu.in/	परीक्षा तिथि – 20 सितम्बर 2021
13.	भारी जल बोर्ड, परमाण ऊर्जा विभाग, भारत सरकार	कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी	6	लेवल–6	31	अंग्रेजी/हिन्दी विाय के साथ स्नातकोत्तर	02 अगस्त 2021	https://www.hwb.gov.in/recuitments	केवल ऑनलाईन आवेदन करें।

वैवाहिक विवादों के हल के लिए समाज स्तर पर एडवोकेट्स की पहल

भारतीय कुमावत समाज, उदयपुर के एडवोकेट द्वारा सामूहिक रूप से यह निर्णय लिया गया है कि समाज के विवाह विच्छेद अथवा पारिवारिक संपत्ति बंटवारे के केस न्यायालय में विचाराधीन है उनका निस्तारण सामाजिक स्तर पर मध्यस्थता करके समझौते द्वारा कराए जावे, इसके लिए संगठन का गठन किया गया है। सर्वप्रथम इस संगठन के चुनाव कराए जाकर कार्यकारिणी का गठन किया जाएगा तथा इस कार्यकारिणी द्वारा समस्त पंचायतों से निवेदन किया जाएगा कि वे सर्वसम्मति एक प्रस्ताव पास करे कि-

''हमारे समाज में किसी भी सदस्य द्वारा दहेज की मांग नहीं की जाती है, दहेज नहीं लिया जाता है एवं ना ही दिया जाता है। विवाह के वक्त वधू पक्ष के द्वारा जो भी वधु को दिया जाता है वह गिफ्ट या उपहार के रूप में वधू को प्रसन्नता से दिया जाता है न कि वर पक्ष द्वारा मांगा जाता है ना हीं इसके लिए कोई दबाव बनाया जाता है।''

यदि फिर भी अपवाद स्वरूप समाज के किसी सदस्य द्वारा दहेज की मांग की जाती है तो वधू या वधू पक्ष द्वारा अविलंब ईमेल पर तथा संबंधित पंचायत या उसके अध्यक्ष को लिखित रूप में सूचित किया जाएगा अन्यथा यह माना जाएगा कि वधू पक्ष द्वारा जानबूझकर मनगढ़ंत आरोप वर पक्ष को परेशान करने के लिए लगाए जा रहे हैं, जो विधि मान्य नहीं रहेंगे। इसका एक प्रारूप समाज के सदस्यों को उपलब्ध करवाया जाएगा जो वर पक्ष द्वारा विवाह के समय वधू पक्ष से हस्ताक्षर करा कर अपने पास रखेगा कि इस विवाह में दहेज का लेन-देन नहीं किया गया है तथा उसकी सत्यापित प्रति इस संगठन को ई-मेल द्वारा तथा संबंधित पंचायत को प्रेषित करेगा ताकि भविष्य में किसी प्रकार का दहेज संबंधित विवाद उत्पन्न ना हो।

वर्तमान में जो भी विवाद न्यायालय विचाराधीन है उनको काउंसलिंग करके मध्यस्था के माध्यम से निस्तारित कराए जाएंगे जिसके समाज को निम्न लाभ होंगे=

1. परिवार बिखरने से बचेगा तथा पति-पत्नी प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन यापन कर सकेंगे।.

2.यदि पति-पत्नी एक साथ रहने के लिए सहमत नहीं है तो आपसी समझौते से विवाह विच्छेद करवाया जाएगा यदि विवाह विच्छेद होता है तो उससे भी समाज को तथा उस परिवार को यह लाभ होगा कि वह लंबी कानूनी लड़ाई से मुक्त होगा तथा लड़का या लड़की अपने जीवन की नई शुरुआत कर सकेंगे।

3. यदि लड़की पुनर्विवाह नहीं करना चाहे तो उसे सरकारी सेवा में प्राथमिकता से नियुक्ति मिल सकेगी।

4. दोनों परिवारों के समय एवं धन की बचत होगी।

- हरिशंकर खण्डारिया, उदयपुर

एक रोचक प्रसंग - जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

श्री राम कथा जहाँ होती हे, वहाँ हनुमानजी महाराज अवश्य पधारते हैं। एकनाथ जी महाराज के चरित्र में एक सुन्दर प्रसंग आता है। एकनाथजी महाराज सुन्दरकाण्ड की कथा कह रहे थे। श्री सीताजी की खोज में समुद्र पार करके हनुमानजी लंका में आये। खोजते-खोजते अशोक वन में गये। जहाँ श्री सीताजी हों वही अशोक वन है। श्री सीताजी पराभक्ति का स्वरूप है। भक्ति जहां हो, वहां शोक नहीं होता। एकनाथजी महाराज ने कथा में कहा कि हनुमानजी जिस समय अशोक वन में आए, उस समय वहां के वृक्षों और लताओं पर श्वेत पुष्प खिल रहे थे।

जहाँ एकनाथजी महाराज की कथा हो रही थी, उस समय नियमानुसार हनुमानजी भी वहाँ कथा सुनने पधारे। हनुमानजी ने प्रकट होकर श्री एकनाथजी महाराज की इस बात का विरोध किया। हनुमानजी ने कहा, ''महाराज! आप यह गलत कह रहे हो। मैंने उस समय अशोक वन में अपनी आँखों से प्रत्यक्ष रूप से फूल देखे थे और वे फूल सफेद नहीं लाल थे।''

श्री एकनाथ जी महाराज ने कहा, ''मैं तो अपने रामजी को रिझाने के लिये कथा करता हूँ। मुझे जैसा दिखाई देता है, वैसा ही मैं वर्णन करता हूँ।''

अन्त में यह विवाद श्रीरामचन्द्रजी के पास गया। श्री रामजी ने कहा, ''तुम दोनों ही सत्य कहते हो। फूल थे तो सफेद, परन्तु, हनुमान जी की आँखे उस समय क्रोध से लाल हो रही थीं, इसलिये उनको वे फूल लाल दिख रहे थे।'' **- देवेश कुमावत, उज्जैन**

छपते-छपते

राजस्थान नगरपालिकाओं में सदस्य मनोनीत

भीलवाड़ा : श्री सत्यनारायण कुमावत पुत्र श्री लादूराम कुमावत

श्री माधोपुर : श्रीमती भगवती देवी कुमावत पत्नी अर्जुन लाल वार्ड नं. 6, मो 9784194713

चौमूं : श्री सांवरमल कुमावत पुत्र श्री सेडूराम मो. 9528520283

उदयपुरवाटी : श्री शिव प्रसाद चेजारा पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण वार्ड नं. 22, उदयपुरवाटी

जल सेना विद्रोह (मुम्बई)

भारत की आजादी के ठीक पहले मुम्बई में रायल इण्डियन नेवी के सैनिकों द्वारा पहले एक पूर्ण हड़ताल की गयी और उसके बाद खुला विद्रोह भी हुआ। इसे ही जलसेना विद्रोह या मुम्बई विद्रोह (बॉम्बे म्युटिनी) के नाम से जाना जाता है। यह विद्रोह 18 फ़रवरी सन् 1946 को हुआ। जो जलयान और समुद्र से बाहर स्थित जल सेना के ठिकानों पर हुआ।

विद्रोह की स्वत: स्फूर्त शुरुआत नौसेना के सिगनल्स प्रशिक्षण पोत '**आई.एन.एस. तलवार**' से हुई। नाविकों द्वारा खराब खाने की शिकायत करने पर अंग्रेज कमान अफसरों ने नस्ली अपमान और प्रतिशोध का रवैया अपनाया। इस पर 18 फ़रवरी को नाविकों ने भूख हड़ताल कर दी। हड़ताल अगले ही दिन कैसल, फोर्ट बैरकों और बम्बई बन्दरगाह के 22 जहाजों तक फैल गयी। 19 फ़रवरी को एक हड़ताल कमेटी का चुनाव किया गया। नाविकों की माँगों में बेहतर खाने और गोरे और भारतीय नौसैनिकों के लिए समान वेतन के साथ ही आजाद हिन्द फौज के सिपाहियों और सभी राजनीतिक बन्दियों की रिहाई तथा इण्डोनेशिया से सैनिकों को वापस बुलाये जाने की माँग भी शामिल हो गयी। विद्रोही बेड़े के मस्तूलों पर कम्युनिस्ट पार्टी, कांग्रेस और मुस्लिम लीग के झण्डे एक साथ फहरा दिये गये। 20 फ़रवरी को विद्रोह को कुचलने के लिए सैनिक टुकड़ियाँ बम्बई लायी गयीं। नौसैनिकों ने अपनी कार्रवाइयों के तालमेल के लिए पाँच सदस्यीय कार्यकारिणी चुनी। लेकिन शान्तिपूर्ण हड़ताल और पूर्ण विद्रोह के बीच चुनाव की दुविधा उनमें अभी बनी हुई थी, जो काफी नुकसानदेह साबित हुई। 20 फरवरी को उन्होंने अपने-अपने जहाजों पर लौटने के आदेश का पालन किया, जहाँ सेना के गार्डों ने उन्हें घेर लिया। अगले दिन कैसल बैरकों में नाविकों द्वारा घेरा तोड़ने की कोशिश करने पर लड़ाई शुरू हो गयी जिसमें किसी भी पक्ष का पलड़ा भारी नहीं रहा और दोपहर बाद चार बजे युद्ध विराम घोषित कर दिया गया। एडमिरल गाडफ्रे अब बमबारी करके नौसेना को नष्ट करने की धमकी दे रहा था। इसी समय लोगों की भीड़ गेटवे ऑफ इण्डिया पर नौसैनिकों के लिए खाना और अन्य मदद लेकर उमड़ पड़ी।

नौसैनिक विद्रोह की मूर्ति (कोलाबा, मुम्बई)

विद्रोह की खबर फैलते ही कराची, कलकत्ता, मद्रास और विशाखापत्तनम के भारतीय नौसैनिक तथा दिल्ली, ठाणे और पुणे स्थित कोस्ट गार्ड भी हड़ताल में शामिल हो गये। **22 फ़रवरी हड़ताल का चरम बिन्दु था, जब 78 जहाज, 20 तटीय प्रतिष्ठान और 20,000 नौसैनिक इसमें शामिल हो चुके थे। इसी दिन कम्युनिस्ट पार्टी के आह्वान पर बम्बई में आम हड़ताल हुई। नौसैनिकों के समर्थन में शान्तिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे मजदूर प्रदर्शनकारियों पर सेना और पुलिस की टुकड़ियों ने बर्बर हमला किया, जिसमें करीब 300 लोग मारे गये और 1700 घायल हुए।** इसी दिन सुबह, कराची में भारी लड़ाई के बाद ही 'हिन्दुस्तान' जहाज से आत्मसमर्पण कराया जा सका। अंग्रेजों के लिए हालात संगीन थे, क्योंकि ठीक इसी समय बम्बई के वायु सेना के पायलट और हवाई अड्डे के कर्मचारी भी नस्ली भेदभाव के विरुद्ध हड़ताल पर थे तथा कलकत्ता और दूसरे कई हवाई अड्डों के पायलटों ने भी उनके समर्थन में हड़ताल कर दी थी। **कैण्टोनमेण्ट क्षेत्रों से सेना के भीतर भी असन्तोष खदबदाने और विद्रोह की सम्भावना की खुफिया रिपोर्टों ने अंग्रेजों को भयाक्रान्त कर दिया था।**

मुस्लिम लीग और कांग्रेस का रवैया : ऐसे नाजुक समय में उनके तारणहार की भूमिका में कांग्रेस और लीग के नेता आगे आये, क्योंकि **सेना के सशस्त्र विद्रोह, मजदूरों द्वारा उसके समर्थन तथा कम्युनिस्टों की सक्रिय भूमिका से राष्ट्रीय आन्दोलन का बुर्जुआ नेतृत्व स्वयं आतंकित हो गया था।** जिन्ना की सहायता से पटेल ने काफी कोशिशों के बाद 23 फ़रवरी को नौसैनिकों को समर्पण के लिए तैयार कर लिया। 22 फ़रवरी को कम्युनिस्ट पार्टी ने जब हड़ताल का आह्वान किया था तो कांग्रेसी समाजवादी अच्युत पटवर्धन और अरुणा आसफ अली ने तो उसका समर्थन किया था, **लेकिन कांग्रेस के अन्य नेताओं ने विद्रोह की भावना को दबाने वाले वक्तव्य दिए थे। नौसेना विद्रोह ने कांग्रेस और लीग के वर्ग चरित्र को एकदम उजागर कर दिया। नौसेना विद्रोह और उसके समर्थन में उठ खड़ी हुई जनता की भर्त्सना करने में लीग और कांग्रेस के नेता बढ़-चढ़कर लगे रहे, लेकिन सत्ता की बर्बर दमनात्मक कार्रवाई के खिलाफ उन्होंने चूँ तक नहीं की।** जनता के विद्रोह की स्थिति में वे साम्राज्यवाद के साथ खड़े होने को तैयार थे और स्वातन्त्रयोत्तर भारत में साम्राज्यवादी हितों की रक्षा के लिए वे तैयार थे। जनान्दोलनों की जरूरत उन्हें बस साम्राज्यवाद पर दबाव बनाने के लिए और समझौते की टेबल पर बेहतर शर्तें हासिल करने के लिए थी।

विद्रोह का प्रभाव : 1967 में भारतीय स्वतंत्रता की 20वीं वर्षगांठ पर एक संगोष्ठी चर्चा के दौरान; यह उस समय के ब्रिटिश उच्चायुक्त जॉन फ्रीमैन ने कहा कि 1946 के विद्रोह ने 1857 के भारतीय विद्रोह की तर्ज पर दूसरे बड़े पैमाने के विद्रोह की आशंका को बढ़ा दिया था। **ब्रिटिश को डर था कि अगर 2.5 मिलियन भारतीय सैनिक जिन्होंने विश्व युद्ध में भाग लिया था, विद्रोह करते हैं तो ब्रिटिश में से कोई नहीं बचेगा।**

दुर्भाग्य से इस विद्रोह को भारतीय इतिहास में समुचित महत्व नहीं मिल पाया। किन्तु नौसैनिक विद्रोह ही अंग्रेजों की ताबूत में आखिरी कील साबित हुआ।

आज हम स्वतंत्र तथा लोकतंत्र भारत में जी रहे हैं। भारत को इस आजादी की कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी यह इस लेख में पढ़े।

भारत-पाक बंटवारे की सच्चाई..!

भारत-पाकिस्तान का बंटवारा दुनिया के इतिहास की सबसे भीषण मानवीय त्रासदी रही, तब इतिहास भी हो गया था शर्मिंदा..!

भारत, ब्रिटिश हुकूमत से 15 अगस्त 1947 को आजाद तो हो गया, लेकिन द्विराष्ट्र के सिद्धांत पर अंग्रेजों ने भारत को आजादी इसी शर्त पर दी कि अखंड भारत हिंदुस्तान और पाकिस्तान के रूप में खंडित होगा। भारत का विभाजन, माउंटबेटन योजना व भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 के आधार पर किया गया। बहरहाल, अंग्रेजों और लॉर्ड माउंटबेटन के लिए भारत और पाकिस्तान नक्शे पर महज एक लकीर के जरिये अलग हो गया, लेकिन **जमीन पर विभाजन की यह रेखा पूरी मानव जाति के इतिहास की एक ऐसी भयावह, रक्तरंजित, अमानवीय, क्रूर और जघन्य घटना थी कि पूरे विश्व की मानवता शर्मसार हो गई।**

दरअसल, भारत और पाकिस्तान का बंटवारा महज 50 से 60 दिनों के भीतर हुआ। आपको जानकार आश्चर्य होगा कि मनुष्य जाति के इतिहास में तकरीबन 1.45 करोड़ लोगों का विस्थापन विश्व में कहीं नहीं हुआ। महज कुछ ही समय में एक स्थान पर सालों से रहने वाले को अपना घरबार, जमीन, दुकानें, जायदाद, संपत्ति, खेती किसानी छोडकर हिंदुस्तान से पाकिस्तान और पाकिस्तान से हिंदुस्तान आये। 1951 की विस्थापित जनगणना के अनुसार विभाजन के एकदम बाद 72,26,000 मुसलमान भारत छोड़कर पाकिस्तान गये और 72,49,000 हिन्दू और सिख पाकिस्तान छोड़कर भारत आए।

धर्म के नाम हुए इस विभाजन में दंगे-फसाद और मारकाट के बीच मानवता जितनी शोषित हुई और छटपटाई उतनी किसी अन्य घटना में नहीं हुई। 10 हजार से ज्यादा महिलाओं का अपहरण किया गया, उनके साथ बलात्कार हुआ, जबकि सैंकड़ों बच्चे अनाथ हो गए इनमें से कई मारे गए।

एक अनुमान के मुताबिक विभाजन की इस रूह कंपा देने वाली और मानवजाति के इतिहास को शर्मिंदा कर देने वाली इस त्रासदी में तकरीबन **20 लाख से ज्यादा लोग मारे गए। इसके बाद आजाद हिंदुस्तान और आजाद भारत दोनों में ही विस्थापन के बाद अपना सबकुछ छोड आए लोगों को अपने जीवन को पटरी पर लाने के लिए, घरबार काम धंधा दोबारा जमाने के लिए शरणार्थी बनकर जिस अमानवीय त्रासदी से गुजरना पड़ा वह तो एशिया के इतिहास का काला अध्याय है।**

विभाजन का यह काला अध्याय आज भी इतिहास के चेहरे पर विस्थापित हुए, भगाए गए, मारे गए, भटक कर मौत को गले लगाने वाली मनुष्यता के खूने के छींटों से भरा है। इतिहास गवाह है, सियासत ने अपने ख्वाबों को तो पूरा किया, लेकिन धर्म के नाम पर, जाति के नाम भोली-भाले इंसानों को हिंदू और मुसलमानों में बांटकर। सियासतदान तो चले गए, लेकिन जनता के दिलों में, पीढ़ियों के दिलों में खूनी विभाजन और विस्थापन यह दर्द आज भी आधी रात को रह-रहकर उठता है..!

सावन के महीने में भगवान शिव को जल क्यों चढ़ाया जाता है?

पृष्ठ 6 से आगे ...

तब से ऐसा माना जाता है कि सावन महीने में भगवान शिव पृथ्वी पर अवतरित होते हैं और यह महीना भगवान शिव को प्रसन्न करने का एक उत्तम महीना माना गया है। मानव स्वभाव से प्रकृति प्रेमी रहा है। सावन माह में आसमान में बादल, पपीहे की पुकार और बारिश की फुहार से खुश होकर लोग सावन मास की शुक्ल तृतीया (तीज) को हरियाली तीज का लोकपर्व मनाते हैं। इस त्योंहार को श्रावणी तीज और हरियाली तीज के नाम से भी जाना जाता है। इस पर्व पर सुहागिन महिलाएँ पूरा श्रृंगार करती है और देवी पार्वती की पूजा-अर्चना करती है।

सावन शुरू होते ही नवविवाहित महिलाओं को पीहर बुला लिया जाता है। हरियाली तीज से एक दिन पूर्व द्वितीया का श्रृंगार दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिसे सिंजारा कहते हैं। सिंजारा वाले दिन किशोरी एवं नवविवाहिताएँ इस पर्व को मनाने के लिए अपने हाथों और पावों में कलात्मक ढंग से मेंहदी लगाती है। तीज वाले दिन महिलाएँ लहरिया की साडी और आभूषणों से सुसज्जित होकर अपनी सखी-सहेलियों के साथ शाम के समय सरोवर या उद्यान में झूला झुलते हुए हरियाली तीज के गीत गाती है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार भगवान शिव को पति के रूप में पाने के लिए माता पार्वती ने 107 जन्म लिये थे। माँ पार्वती के कठोर तप और उनके 108वें जन्म में भगवान शिव ने देवी पार्वती को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया था। तभी से इस व्रत की शुरूआत हुई। इस दिन जो सुहागिन महिलाएँ सोहर श्रृंगार करके भगवान शिव और देवी पार्वती की पूजा करती है। उनका सुहाग लंबे समय तक बना रहता है।

-रेणु कुमावत, वरिष्ठ अध्यापिका
निर्माण नगर, जयपुर मो. 8209687840

अश्लीलता का समाज पर दुष्परिणाम

आज हम समाज में चहुंओर पनप रही एक ऐसी विकृत सामाजिक समस्या के विषय में विचार विमर्श करेंगे जो कि आज की युवा पीढ़ी खास तौर पर लड़कियों से संबंधित है। आज कल की लड़कियों के पहनावें को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि सभ्यता पुन: विपरीत दिशा में गतिमान हो रही है। आज शिक्षा, अधिकार, स्वतन्त्रता आदि किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाए तो नारी की स्थिति सुदृढ़ ही हुई है। किन्तु अनायास ही उनके पहनावे में ये विरोधाभास कैसे आ गया। आज फैशन का ये कैसा दौर आ गया कि लड़कियाँ कम कपड़ों में खुले आम घूमने लगी हैं। यदि हम यह मानें कि आज की नारी शिक्षित है तथा सभ्य है तो फिर अपने वस्त्रों के चयन में उनकी दूरदर्शिता कैसे बदल रही है? आजकल लड़कियाँ आधुनिकता के नाम पर अंगप्रदर्शन करती फिरती हैं। परन्तु इसे हम आधुनिकता कहेंगे या आज की पीढ़ी की विकृत मानसिकता। एक विक्षिप्त में और ऐसी लड़कियों में फर्क क्या है? जबकि दोनों को अपने कपड़ों की सुध-बुध नहीं है। **सबसे पहले तो मैं उन सभी लोगों से क्षमा चाहती हूँ जो मेरे विचारों से असहमत हैं** तथा मेरे विचार शायद उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचा सकते हैं। हमारे विचार स्वतंत्र हैं, आपके विचार मेरे विचारों से पृथक हो सकते हैं।

शिक्षित होने का सम्बन्ध यदि आधुनिकता से है तथा आधुनिक होने का संबंध अर्द्धनग्न घूमने से है तो फिर आदि मानव क्या था? क्या वह अत्याधुनिक था या फिर अतिशिक्षित था? जी ऐसा कदापि नहीं था शिक्षा तो हमें अच्छे बुरे का भेद सिखाती है व हमें समाज में रहने का सलीका सिखाती है। ऐसा भी नहीं है कि सभी युवतियाँ पहनावे के प्रति एक से विचार रखती है। ऐसी भी लड़कियां हैं जो सभ्य वस्त्र पहनने में विश्वास रखती हैं। यदि आप वास्तव में शिक्षित, सभ्य, होनहार तथा योग्य हैं तो अनेक कारक हैं जो आपकी ओर दुनिया का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं। आपकी उपलब्धियां, आपकी सफलता तथा आपका अच्छा व्यवहार इत्यादि। आज हमारी बेटियां पढ़-लिख कर डॉक्टर, इंजीनियर, पायलट, शिक्षिका तथा अन्य अनेक क्षेत्रों में अपना नाम रोशन कर रही है। दुनिया उन्हें उनकी काबलियत से पहचानती है तथा उनकी प्रशंसक है। लोग उनका उदाहरण देकर अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते हैं। यदि प्रसिद्धि चाहिए तो अपनी अच्छाइयों से हासिल करें। जिस्म की नुमाइश करने से दुनिया का दिल कभी नहीं जीता जा सकता। माता-पिता अपनी बच्चियों में अच्छी भावना जागृत करें ना कि उन्हें आधुनिकता के नाम पर तुच्छ कपड़े पहनने की सलाह दें। क्योंकि मानव मन में उत्पन्न किसी भी विचार धारा का प्रमुख स्रोत माता-पिता के द्वारा प्रदत्त संस्कार ही होते हैं। बच्चों को अच्छे संस्कार देने का पहला दायित्व माता-पिता का ही होता है क्योंकि लड़की जब तैयार होकर घर से निकलती है तो सर्वप्रथम परिवारजनों की नजर ही उस पर पड़ती है। यदि माता-पिता बच्ची को वहीं टोक दें कि सलीके का कपड़ा पहन कर घर से निकलो, तो निश्चित तोर पर मानिये कि आपकी बच्ची सुरक्षित ही घर वापस लौटैगी। आज देश भर में छोटी बच्चियों से यौनाचार की घटनाएं आग की तरह फैल रही हैं। बच्चियाँ घर में तथा बाहर शारीरिक अत्याचार की शिकार हो रही हैं। ऐसा नहीं है कि इसके पीछे कोई एक कारण है। अनेक घटक हैं जो पुरुषों की इस विकृत मानसिकता तथा आपराधिक प्रवृत्ति के प्रति उत्तरदायी हैं किन्तु इनमें से एक कारण आजकल की लड़कियों का पहनावा भी है। इसे एक प्रकार से समझें कि किसी भी मनुष्य की मानसिकता उसके सम्मुख आने वाले दृश्यों के अनुरूप कार्य करती है। साथ ही वेशभूषा हमारा आईना भी होती हैं जैसे एक राजा या रानी को, सिपाही को, फौजी को, डॉक्टर को या वकील को उसकी विशेष वेशभूषा में देखते ही हमारा दिमाग स्वत: ही हमें संदेश देकर उसका परिचय दे सकता है। ठीक उसी प्रकार अभद्र तथा कामुक वेशभूषा में सामने खड़ी लड़की को देखते ही दिमाग क्या संदेश देगा? निश्चित रूप से आपके मन में उसके प्रति सम्मान भाव तो उत्पन्न नहीं होगा। आज के समय में युवतियों में सुरक्षा के प्रति चेतना तथा जागरूकता तथा सुरक्षा कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन के चलते महिलाओं तथा युवतियों से दुराचार करना पुरुषों के लिए असुरक्षित हो गया है। इस कारण ऐसे अपराधी छोटी बच्चियों को अपना शिकार बनाते हैं। युवतियों को इस बात का अनुमान होना चाहिए कि उनके रहन-सहन व पहनावे के परिणामस्वरूप वो निर्दोष बच्चियाँ दण्डित हो जाती हैं जो कि फैशन का मतलब भी नहीं जानती। युवा पीढ़ी का यह दायित्व है कि वह सही तथा गलत में, उचित तथा अनुचित में अन्तर को पहचानने की कोशिश करें। अपने आचरण में सुधार करें तथा अपनी सुरक्षा के प्रति स्वयं सचेत रहें। अपने असुरक्षित भविष्य के लिए दूसरों पर सारा दोषारोपण करने की बजाए स्वयं को इतना मजबूत बनाएं कि किसी की आपकी तरफ गलत नजर उठाने की तथा आपसे अभद्र व्यवहार करने की हिम्मत ही नहीं हो। जिस प्रकार शराब की दुकानों पर प्रतिबंध लगाने के लिए आवाज उठायी जाती है क्योंकि यह नशा व्यक्ति की मानसिक स्थिति को भ्रमित करके उसे अपराधों की ओर धकेलता है उसी प्रकार अश्लीलता भी एक प्रकार का नशा है जो समाज में यौन अपराधों को बढ़ावा देता हैं। इस बुराई पर प्रतिबंध तथा रोकथाम की नितान्त आवश्यकता है।

- उर्वशी बालोदिया

(यह लेखिका के व्यक्तिगत विचार हैं।)

बढ़ती उम्र को स्वीकारें

यह सर्वविदित है कि समय का चक्र सदैव निर्बाध गति से घूमता है ठीक उसी तरह उम्र भी किसी के रोके रुकती नहीं है। हम जन्म से लेकर विभिन्न पड़ाव पार करने होते हैं यथा बाल्यावस्था से किशोरावस्था, फिर अट्ठारह की उम्र में वयस्क अर्थात युवावस्था का प्रारंभ। युवावस्था से लेकर पौढ़ता तक का पड़ाव और इसके पश्चात् वृद्धावस्था।

अपने जन्म से कुछ वर्षों तक तो बालक में अत्यधिक ऊर्जा होती है किंतु अपनी परवरिश के लिए उसे माता-पिता या दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। यह अवस्था ऐसी है जिसमें बच्चे की बालसुलभ वृत्तियों की वजह से घर का पूरा वातावरण आनंदित रहता है उसकी किलकारियों से लेकर बोलना, चलना सब मन को मोहक लगता है। उसके बाद बच्चे को धीरे-धीरे अनुशासन में ढालने की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है और समाज द्वारा निर्धारित मापदंडों के आधार पर उसका पालन पोषण किया जाता है।

युवावस्था तक आते-आते वह बच्चा अच्छी तरह से अपने घर बाहर के सारे वातावरण को बखूबी समझ जाता है अपने शारीरिक व मानसिक बदलावों को भी समझने लग जाता है। इस उम्र में उसके अंदर अथाह ऊर्जा संचित रहती है जो उसकी भविष्य की दिशा को निर्धारित करती है और उसके संजोए गये सपनों को हकीकत में बदलने का प्रयास करती है। हालांकि सबके अनुभव अलग-अलग होते हें और उसके स्वभाव को बनाने में ये उसकी बहुत मदद करते हैं। व्यक्ति का स्वभाव, चरित्र ये सब उसके व्यक्तित्व को दर्शाते हैं।

अपने लक्ष्य और सपनों की सार्थकता उसके कर्म, सोच, मेहनत और यदा-कदा भाग्य पर भी निर्भर करती है। किन्तु केवल भाग्य पर निर्भरता अनुचित है।

धीरे-धीरे वक्त बीतने के साथ अपने गृहस्थ जीवन में उसे कई उतार-चढ़ाव देखने को मिलते हैं और विचारधारा में कई बदलाव लाने पड़ते हैं किन्तु एक बड़ी सच्चाई है कि एक समय जो अथाह ऊर्जा उसके अंदर थी उसका ह्रास होने लगता है।

युवावस्था ढलने व प्रौढ़ता का आगमन होने पर वह देखता है कि इच्छाएं अंतहीन हैं किंतु उन्हें पूरी करना असंभव है, शारीरिक दुर्बलता उम्र के बढ़ते क्रम का एहसास कराने लगती है जो आकांक्षाएँ पूरी हुई उन्हें व्यक्ति भूल सा जाता है किंतु अधूरी अभिलाषाएं धीरे-धीरे व्यक्ति को कुंठित करने लग जाती हैं वृद्धावस्था आते-आते याददाश्त का धुंधलापन उस कुंठा को बढ़ाता है मनन करने की आदत नहीं होने से खीजना भी स्वभाव में आ जाता है। बहुत कुछ यानि पैसा, परिवार, दोस्त सब होते हुए भी अकेलापन महसूस होता है। कहा जाता है कि व्यक्ति एक ही बात को बार-बार दोहराने लगे तो समझों की वह सठियाने लगा है।

अपने इस स्वभाव के चलते युवा लोग धीरे-धीरे उनसे दूरी बनाने लग जाते हैं। समय पर यदि उनका कोई काम चाहते हुए भी नहीं हुआ तो क्रोध करना आम हो जाता है। अक्सर हम यह भी सुनते हैं कि मैंने सबके लिए इतना किया पर मुझे क्या मिला। ये सब बढ़ती उम्र का एक हिस्सा बन जाती है और इस सोच के साथ वे अपना दायरा सीमित कर लेते हैं और परिवार में कटुता व वैमनस्य बढ़ने लगता है। उन्हें लगने लगता है कि वे परिवार पर अब बोझ बन गए हैं जबकि उन्हें बुजुर्ग होने के नाते सम्मान दिया जाता है। उन्हें कभी यह भी लगता है कि उन्हें कोई सुनना नहीं चाहता। उन्हें अपने मन से कोई कुछ करने नहीं देता।

हमारी संस्कृति में बुजुर्ग लोग अति सम्माननीय होते हैं किन्तु बढ़ती उम्र में स्वीकार नहीं करना व उम्र के साथ अपनी सोच में बदलाव नहीं कर पाने के कारण यह दुविधा उत्पन्न हो जाती है यदि इसके लिए स्वयं के अन्दर कुछ बदलाव किए जाते हैं तो यह राह भी आसान हो जाती है। चूंकि बुढ़ापा बचपन का पुनरागमन होता है तो स्वयं को बच्चों के साथ जोड़े और स्वयं बच्चे बन जाएं। **बार-बार किसी भी बात की पुनरावृत्ति करने से बचें। एक बार में किसी चीज की सुनवाई न हो तो धैर्य रखें।** अपने से छोटों की तारीफ करना शुरू करें। घर या बाहर के के कार्यों में अनावश्यक टोका-टाकी करने से बचें। चूंकि स्वयं से छोटी उम्र के लोग भी जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रहे हैं तो उन्हें ज्यादा न कोसें। अपने कार्यों को पहले से ही परिवार को बता दें और उनके पूरा होने का इंतजार करें। **नये परिवेश के साथ भी स्वयं को ढालने का प्रयास करें। हो सके तो खाली समय में पुस्तकें पढ़ने, टहलने, लिखने या अच्छा संगीत सुनने की आदत डालें।**

नियमित योग व मेडिटेशन से भी अपने अंदर सुंदर बदलाव महसूस किया जा सकता है। अपने आहार में भी नियंत्रण रखकर स्वस्थ व सहज बनाएं रखने का प्रयास करें। सबसे अच्छी बात होगी की इस अवस्था में प्रवेश करने के लिए स्वयं को अच्छी तरह से तैयार करें ताकि किसी को दोष न देना पड़े और हमेशा सकारात्मक रहें।

आत्म मंथन करना अपनी अच्छी आदतों में स्वीकार करें। हँसना व मुस्कुराते रहना आपको सबके बीच लोकप्रिय बना देगा। हाँ, अपनी बीमारियों का बखान भी सबके सामने बार-बार न करें। इसे अवश्य आजमाएं फिर देखिए आपकी यह उम्र भी उसी अंदाज में गुजर जाएगी जो आपने अब तक जी है।

-भारती तोंदवाल

महिला मंडल, मंदसौर द्वारा पर्यावरण संवर्द्धन

मंदसौर के कुमावत महिला मंडल द्वारा खाद-बीज युक्त 500 सीड्स बाल बना कर पर्यावरण संरक्षण अभियान में सहभागिता का आगाज किया है।

हमारे समाज की इन महिलाओं द्वारा घर का कामकाज छोड़कर रामटेकरी स्थित कुमावत धर्मशाला में कुछ ही समय में 500 सीड बॉल बना दी। इन सीड बॉल में खाद, उर्वरक के साथ ही नीम, इमली,

महिला मण्डल अध्यक्षा निशा लोकेन्द्र कुमावत ने बताया कि कोरोना महामारी के समय हम सभी ने देखा कि किस तरह लोगो को ऑक्सीजन की कमी हुई, मरीजों के परिजन कैसे ऑक्सीजन के लिए भटकते रहे ? वहीं अल्प वर्षा की स्थिति हो गयी है। इन सभी पर विचार करते हुए पर्यावरण सरंक्षण करना जरूरी हो गया है। हमारे भविष्य को बेहतर बनाने के लिए अभी से प्रयास शुरू करने होंगे। इस कड़ी में **'कुमावत समाज महिला मंडल'** द्वारा यह छोटा सा प्रयास किया गया है। इन सीड बम को खुले मैदान या खाली जगहों पर डाला जाएगा जिससे ये बारिश के सम्पर्क में आकर पोधों का रूप धारण करेंगे और आने वाले वर्षो में पेड़ के रूप में विकसित होंगे तथा पर्यावरण संरक्षण हो पाएगा।

सीड बम बनाने में महिला मण्डल की मधु नरानिया, लता राजलवार, श्रीकांता नोकवाल, प्रमिला रावरिया, सुनीता बरानीया, गिरजा माचीवाल, सुमन नोकवाल, प्रीति कुमावत, कविता कुमावत, मनोरमा जाकड़ा, निर्मला माडेला ने सहयोग प्रदान किया।

कुमावत समाज की इन महिलाओं के इस प्रयास की कुमावत इंडिया पत्रिका सराहना करती है।

कुमावत युवा शक्ति की नवीन कार्यकारिणी का गठन

किरोड़ीवाल अध्यक्ष व दुबलदिया बने सचिव

रूपनगढ़ कस्बे में स्थित श्री सांवलाजी महाराज के मंदिर में अमावस्या के दिन कुमावत युवा शक्ति की बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें युवा शक्ति के नवीन कार्यकारिणी का गठन का प्रस्ताव रखा गया। जिसमें सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद पर पत्रकार सूरज किरोड़ीवाल को चुना गया।

साथ ही कार्यकारिणी का विस्तार करते हुए किशन राहोरिया उपाध्यक्ष, मुकेश दुबलदिया सचिव, देवकरण कुदाल कोषाध्यक्ष, अनिल राहोरिया सूचना प्रभारी, गणेश बड़ीवाल संगठन मंत्री, दुर्गालाल जेठीवाल सहसंगठन मंत्री, गोवर्धन धुन्धारियां प्रचारमंत्री, ताराचंद धुन्धारियां सलाहकार और वरिष्ठ सदस्य नरसीराम जायलवाल और विजयप्रकाश जलान्धरा को नियुक्त किया गया।

इस मौके पर समाज के गणमान्य लोगों के साथ युवा शक्ति के सदस्यगण उपस्थित थे। नवीन कार्यकारिणी को **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से बधाई।

24वीं बार रक्तदान कर इंसानियत की मिशाल पेश

श्री नंद किशोर कुमावत, राजस्थान जर्नलिस्ट एसोसिएशन (JAR) के मीडिया प्रभारी ने रियां उपखंड में कोरोना वारियर्स के रूप में उत्कृष्ट कार्य करने अनेक संस्थाओं ने प्रशस्ति पत्र दे कर सम्मानित किया। हाल ही में रियां उपखंड अधिकारी श्री सुरेश केम ने भी इन्हें सम्मानित किया है।

श्री नंद किशोर कुमावत ने कोरोना काल मे 24वीं बार रक्तदान कर इंसानियत की मिशाल भी पेश की है एवं अनेक मरीजों को अस्पताल से ब्लड की व्यवस्था करा कर सहयोग दिया है।

मदन सिंह जी बाबरवाल सहवृत पार्षद का सम्मान

भारतीय कुमावत क्षत्रिय नगर महासभा, उदयपुर द्वारा दिनांक 29 जून 2021 को महासभा भवन प्रांगण में श्रीमान मदन सिंह जी बाबरवाल सहवृत पार्षद का उदयपुर नगर महासभा के संरक्षक एवं मुख्य अथिति श्रीमती कमला जी टाँक, ज्योति शिक्षण संस्थान के संस्थापक श्री गिरधारी लाल जी सिंघलवाल, श्रीमती नेहा जी टाँक, पूर्व अध्यक्ष, नगर महासभा श्री हरिशंकर जी खण्डारिया की अध्यक्षता में कोविड-19 की पूर्ण पालना करते हुए सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

आयोजित सम्मान समारोह में अथिति श्री दयाशंकर जी रावडिया, महामंत्री,द.प.जोन राज., श्री रमेश चन्द्र जी भदानिया, अध्यक्ष पुलां पंचायत, श्री पुरुषोत्तम जी उदीवाल, अध्यक्ष चांदपोल पंचायत एवं श्री हरीश जी आसीवाल, अध्यक्ष प्रवासी समिति थे।

सर्व प्रथम संयोजक श्री अनूप टाँक ने कार्यक्रम में पधारे विशिष्ट अथिति, मुख्य अथितियों, अथितियों को मंच पर आमंत्रित करते हुए महासभा टीम के श्री बी एल मंडावरा, अविनाश बातरा, अनूप टाँक, पंकज टाँक, जितेंद्र टाँक, कुलदीप टाँक, अशोक सिंघलवाल, पंकज साड़ीवाल द्वारा उपरना ओढ़ाकर स्वागत किया। इसके पश्चात कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

समारोह के विशिष्ठ अथिति **श्रीमान मदन सिंह जी बाबरवाल**, सहवृत पार्षद का नगर महासभा अध्यक्ष श्री युवराज जी नाहर ने मेवाड़ी पगड़ी एवं उपरना ओढ़ाकर स्वागत कर स्मृति चिन्ह भेंट किया।

इसके साथ ही अथितियों द्वारा कोरोना योध्दा श्री जितेंद्र जी टाँक, श्री अनूप जी टाँक, श्री हितेश जी जालवार आदि को उपरना ओढ़ाकर स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर विशिष्ट अथिति श्री मदन सिंह जी बाबरवाल ने अपने उदबोदन में महासभा का आभार व्यक्त करते हुए ये आश्वासन दिया कि समाज हित में कोई भी कार्य नगर निगम स्तर का होगा उसे सहयोग कर पूर्ण करवाया जायेगा।

पार्षद श्रीमती नेहा जी टाँक ने अपने उदबोधन मे सभी का स्वागत, अभिनन्दन करते हुए आज के सम्मान के लिए आभार व्यक्त किया। श्रीमान बाबरवाल ने कहा कि जो भी महासभा को सहयोग की अपेक्षा होगी उसके लिए पूरे प्रयास कर सहयोग किया जाने का आश्वासन देते हुए नगर महासभा भवन पर 11 ट्री गार्ड, पौधे एवं श्रीराम मंदिर में एक पंखा भेट करने की घोषणा की।

मंच संचालन संयोजक श्री अविनाश जी बातरा ने किया।

अंत मे नगर महासभा अध्यक्ष श्री युवराज जी नाहर ने समारोह में पधारे विशिष्ट, मुख्य अथितियों, पंचायत अध्यक्षों, कोरोना योध्दाओं एवं सभी समाज बन्धुओं, माताओं और बहनों को धन्यवाद देते हुए सभी को अल्पहार के लिए आमंत्रित करते हुए कार्यक्रम समापन की घोषणा की।

नेमीचंद कुमावत ने दिया ईमानदारी का परिचय

16 जुलाई को नवलगढ रोड, सीकर पर विनायक फिलिंग स्टेशन के मालिक एवं भाजपा नेता **नेमीचंद कुमावत** को 30,000 रुपये रास्ते में पड़े मिले। अपनी ईमानदारी का परिचय देते हुए इसकी सूचना श्री कुमावत ने उद्योग नगर पुलिस अधिकारी श्री पवन कुमार चौबे को दी। साथ ही सोशियल मीडिया पर सूचना को पोस्ट भी किया। जिस पर हाथ ठेला लगाने वाले प्रमोद चौधरी निवासी झुंझुनूं ने संपर्क कर पैसे अपने होना बताया। प्रमोद एक गरीबी व्यक्ति है जिसने एक दिन पूर्व ही बैंक से लोन लिया था। बारिश कि वजह से यह राशि जल्दबाजी में गुजरते समय नवलगढ़ रोड पर गिर गयी थी। इस तथ्य को उद्योग नगर पुलिस अधीक्षक ने जांच पर सही पाया एवम् संतुष्ट होने पर श्री कुमावत के सामने उन रुपयों के असली मलिक प्रमोद चौधरी को रुपए सौंपे श्री प्रमोद ने श्री नेमीचंद कुमावत का बहुत बहुत आभार जताया।

यह एक मिशाल है कि कुमावत समाज के लोग ईमानदार व खुद्दार होते है तथा स्वयं की कमाई से ही संतुष्ठ रहते है।

श्री नेमीचंद कुमावत के ईमानदारी पूर्ण व्यवहार की 'कुमावत इंडिया' पत्रिका प्रशंसा करती है।

कुमावत समाज के 16जोड़े परिणय सूत्र में बंधे

थांवला कस्बे के क्षत्रिय कुमावत सामूहिक विवाह एवं विकास समिति द्वारा कोरोना के कारण स्थगित किए गए सामुहिक विवाह सम्मेलन का सरकार की नई कोरोना गाइडलाईन के तहत आयोजन किया गया। अध्यक्ष सत्यनारायण रामभजो व समिति के सदस्यों ने बताया कि 18 मई गंगासप्तमी को यह सम्मेलन आयोजित करना था। जिसके लिए वधू पक्ष की ओर से सावे भी लिखे जा चुके थे लेकिन महामारी फैलने से लॉकडॉउन के कारण सम्मेलन को स्थगित करना पड़ा था समिति के सदस्यों ने सरकार की कोरोना गाइडलाईन के तहत ही चार स्थानों पर विभाजित कर जोड़ों का विवाह की व्यवस्था की और परिवार के लोगों की मौजदूगी में पाणिग्रहण संस्कार संपन्न कराया। कुमावत युवाशक्ति के कार्यकर्ताओं ने व्यवस्था में जुटकर कर कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया। विवाह समिति की ओर से वर वधु को प्रमाण पत्र देकर सुखी दाम्पत्य जीवन की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर विवाह समिति प्रबंधक ओम प्रकाश सारड़ीवाल, कोषाध्यक्ष पाबूराम मावर, सचिव छोटूराम रेणीवाल, उपाध्यक्ष बाबूलाल सीसीवाल, एवं समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

कुमावत समाज निमाज का 11वां सामूहिक विवाह सम्मेलन सम्पन्न

निमाज ग्राम में कूबाजी महाराज के मंदिर पर कुमावत समाज द्वारा आयोजित 11वें सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस अवसर पर कुल 14 जोड़ों ने वैवाहिक बंधन की शुरुआत की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सुमेरपुर विधायक माननीय श्री जोराराम कुमावत, जिला परिषद सदस्या श्रीमती आशा कुमावत, कार्यक्रम संयोजक शिवराम एकलिया, विवाह समिति के अध्यक्ष बंशीलाल कुमावत, उपप्रधान पप्पूराम कुमावत, गोडवाड़ कुमावत शिक्षा समिति के उपाध्यक्ष भूराराम कुमावत, समाजसेवी श्यामलाल पंच सहित अनेक भामाशाह एवं कुमावत समाज बंधु उपस्थित थे।

भाजपा प्रतापगढ के ओबीसी मोर्चा जिला उपाध्यक्ष पद पर किशनजी कुमावत को नियुक्त किए जाने पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ !

श्रीमती प्रमिला कुमावत सरपंच ग्राम पंचायत रोहिली को खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग, राजस्थान द्वारा को बाड़मेर ग्रामीण तहसील क्षेत्र की उचित मूल्य दुकान आवंटन सलाहाकार समिति की सदस्य मनोनीत किया गया है।

कुमावत इंडिया पत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

एकता को पीचडी

मोहनलाल सुखाडिया विवि की ओर से एकता कुमावत को ''एकीकृत प्रतिवेदन एवं मूल्य निर्माण चयनित कंपनियों का एक वैयक्तिक अध्ययन'' विषय पर पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। एकता ने यह शोध प्रो.जी. सोरल के निर्देशन में पूर्ण किया। पी.एच.डी. करने पर एकता को '**कुमावत इंडिया**' पत्रिका की ओर से बधाई।

आयुषी कुमावत का RAS-2018 में चयन

सुश्री आयुषी कुमावत पुत्री श्री राजेश कुमार वर्मा निवासी इंजीनियर्स कॉलोनी, मान्यावास, मानसरोवर, जयपुर का प्रथम प्रयास में RAS-2018 में 727वीं रैंक पर चयन हुआ है। आपने B.Tech (Electronics & Comm.) में किया है। आपके पिता AAO-I के पद से राजस्थान सरकार से सेवानिवृत्त हैं तथा माता श्रीमती उर्मिला ग्रहणी है। 26 वर्षीय आयुषी ने सफलता का श्रेय अपने माता-पिता व परिवार को दिया है।

गुरु के रहिये दास.....

आदिकाल से भारतभूमि देवताओं, महर्षियों, संतो, विद्वानों, संन्यासियों, प्रकांड पंडितों और गुरुओं की स्थली रही है। समय-समय पर जगत विख्यात गुरुओं के कारण भारतवर्ष का उत्कर्ष हुआ है और वह चरमोत्कर्ष पर पहुंचता रहा है। गुरुओं ने आदर्शों और नियमों के ऐसे मानक बनाएँ कि उनकी दिखाई राह पर चलकर उनके शिष्यों ने जगत कल्याण किया। उनके द्वारा स्थापित आदर्शों से देश-दुनिया में भारत का नाम हुआ और सनातन संस्कृति की परम्परा और संस्कार से दुनिया का परिचय हुआ।

गुरु-शिष्य परम्परा के कुछ महान् संत हजारों सालों के बाद भी उनके महान् कार्यों की वजह से याद किये जाते हैं और उनके ज्ञान, आदर्श, कार्य ओर उपदेश पर चलकर लोग अपना जीवन सार्थक करने में लगे हुए हैं। **ऐसे महान् गुरुओं में शंकराचार्य, परशुराम, सांदीपनि, महर्षि वशिष्ठ, महर्षि वेदव्यास, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य प्रमुख है।**

गुरु व देवता में समानता के लिए एक श्लोक है- '**यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरु**' अर्थात् जैसी भक्ति की आवश्यकता देवता के लिए है वैसी ही गुरु के लिए भी। संत कबीर जी ने भी कहा है कि- '**हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे नहिं ठौर।**' अर्थात् भगवान के रूठने पर तो गुरु की शरण रक्षा कर सकती है परन्तु गुरु के रूठने पर कहीं भी शरण मिलना संभव नहीं है। '**गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय, बलिहारी गुरू अपने गोविन्द दियो बताय।**' अर्थात् गुरू और गोविन्द एक साथ खड़े हों तो किसे प्रणाम करना चाहिए, गुरू को अथवा गोविन्द को ? ऐसी स्थिति में गुरू के श्रीचरणों में पहले शीश झुकाना उत्तम है जिनके कृपा रूपी प्रसाद से गोविन्द का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

एक समय की बात है नारद जी विष्णु भगवानजी से मिलने गए। भगवान ने उनका बहुत सम्मान किया। नारद जी जब वापस गए तो विष्णुजी ने कहा- 'हे लक्ष्मी जिस स्थान पर नारद जी बैठे थे, उस स्थान को गाय के गोबर से लीप दो।'

शेष पृष्ठ 22 पर ...

सावन - बरखा

✍ प्रहलाद कुमावत 'चंचल'

सरस सुहावन सावन आया।
रिमझिम का संगीत सुनाया।

सरसाये सब तरुवर डाली।
उपवन में छाई हरियाली।

कोकिल मोर पपीहन गाए।
दादुर सुन्दर ताल मिलाए।

लता कुंज तरु पल्लव फूले।
डाल डाल मनभावन झूले।

परदेशी साजन घर आया।
हरख घनेरा तन मन छाया।

शिवभक्तों को सावन प्यारा।
गुँजा रहे हर हर जयकारा।

बिल्वपत्र नित करते अर्पण।
शिव चरणों में पूर्ण समर्पण।

कांधे कांवड़ पीताम्बर है।
बम बम बोले पंचम स्वर है।

सोमवार व्रत दिव्य पुनीता।
मनभावन वर पाय वनीता।

रिमझिम करता सावन आया।
शिव सेवक द्वय मन हरषाया।

सावन आवन की अभिलाषा।
पिया बिना सखि भई निराशा।

उमड़ घुमड़ घनघोर घटाएँ।
विरह दामिनी मोहि डराएँ।

कूक पपीहन मोहि सताए।
पिउ पिउ कह पीर जगाए।

मन का निर्झर तुम बिन रीता।
बिन बारिश ज्यों सावन बीता।

'चंचल' चपला शोख डरावन।
तुम बिन साजन कैसा सावन।

उमड़ घुमड़ के आई बरखा।
महकी धरती अम्बर हरखा।

गावत कोयल अमुआ डारी।
दादुर ताल मिलावत प्यारी।

कूक पपीहा बहुरि सताए।
याद पिया सब रैन जगाए।

गरज रही घनघोर दामिनी।
देख देख अति डरे भामिनी।

'चंचल' नैन भये घन सावन।
बरखा बैरिन बिन मनभावन।

भोजन कैसे करें ?

'भोजन' अर्थात आहार तैयार करने में कितने लोगों का सार्थक योगदान होता है। भोजन करने से पहले यह जानना हम सभी के लिए जरूरी है। अन्न व सब्जियों का बीज तैयार करना, उसका विपणन करना, किसान तथा कृषि के लिए खेत को तैयार करना फिर बीजारोपण से लेकर फसल तैयार करने में खून-पसीना एक कर देना, फसल को मण्डी तक पहुँचाना, थोक विक्रेता से फुटकर विक्रेता तक होते हुए हम तक अन्न-सब्जियाँ आना, इसके बाद हमारे घर पर माताओं-बहिनों द्वारा साफ करके रसोई तक रोटी व सब्जी बनाने की प्रक्रिया के अनेक चरण से गुजरते हुए भोजन, थाली तक यह पहुँचता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इन सभी का योगदान होता है तब जाकर भोजन ग्रहण करने की स्थिति आती है।

पर हम शादी-समारोहों व होटल्स में भोजन को प्लेटों में छोड़ते देखते हैं तो बहुत दु:ख होता है। वह भी ऐसे देश में जहाँ एक तिहाई आबादी को आधे पेट भोजन मिलता है। यदि भोजन को नष्ट होने से बचा सकें तो ये लोग भी भरपेट भोजन कर पायेंगे। आवश्यक है बचा हुआ भोजन समय पर उन्हें उपलब्ध करा पायें।

भारतीय साहित्य व संस्कृति में, बैठकर भोजन करना श्रेष्ठ माना गया है। जब हम भोजन करें तो टी.वी. आदि नहीं दखें। नाक से गंध, जिव्हा से स्वाद, हाथ की अंगुलियों से ठण्डा-गर्म व कठोर-कोमल का अहसास और आँखों से रूप-रंग की अनुभूति के साथ भोजन करने से भोजन सुपाच्य होता है, समस्त इंदियों की संतुष्टी होती है तथा शरीर को भोजन सुदृढ़ बनाता है। किन्तु याद रखें कि 'अत्याहार' नहीं करें, ऐसा करने से शरीर में अनेक दोष उत्पन्न होते हैं। अधिक अच्छी भोज्य वस्तुएँ होने पर भी संयमित रहना एवं संतुलित भोजन करना स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहता है।

वृद्धावस्था में भोज्य पदार्थों का स्वाद लेने की प्रबल इच्छा व उत्सुकतावश अत्याहार नहीं करना चाहिए। वृद्ध व्यक्तियों को अत्यावहार-त्याग कर स्वयं के शरीर के अनुकूल सुपाच्य भोजन कर निर्वाह करना ही उचित है।

घर पर यदि कभी भोजन स्वादिष्ट नहीं बने तो भोजन का निरादर व तिरस्कार नहीं करना चाहिए। इससे एक तो भोजन करने वाले को तृप्ति नहीं होती वहीं, दूसरी ओर कठिन परिश्रम करके भोजन तैयार करने वाले अपनों का ही अपमान होता है। हाँ, इस बारे में सलाह दी जा सकती है किन्तु आलोचना व निरादर नहीं करना चाहिए।

कर्मशील व्यक्ति को आजीविका कमाकर भोजन करने पर अत्यन्त सुख की प्राप्ति होती है। किन्तु भिक्षा में प्राप्त भोजन से पेट तो भरा जा सकता है किन्तु सुख व तृप्ति नहीं हो सकती है। अत: कर्म द्वारा निर्वाह ही सार्थक है अर्थात् आजीविका कमाकर भोजन करने से ही सुख व सन्तुष्टि की प्राप्ति होती है।

परिवार एक कवच है, इसके अभिन्न अंग बने रहें

परिवार के बिना **जीवन की कल्पना नहीं हो सकती**। इस दुनिया में जन्म लेते ही परिवार ही देखभाल करता है। परिवार जीवन का अभिन्न अंग है। भारत में परिवार एक सुरक्षा कवच की भाँती है। सुख-दु:ख में साथ की गारन्टी होता है हमारा परिवार। शहरीकरण तथा बदलते परिवेश में संयुक्त परिवार बिखरने लगे, आर्थिक समस्याओं ने भी छोटे परिवार अपनाने को मजबूर किया। पर हम भूल गये कि बच्चों की प्रथम पाठशाला तो परिवार है। जहाँ एक बच्चा भौतिक दुनिया का सामना करने के लिए शब्द, आचरण, संस्कार व ज्ञान अर्जित करता है। साथ ही माता-पिता व परिवार के गुण विरासत में पाता है। परिवार का सही मार्गदर्शन हमें जीवन के शिखर पर ले जाता है। जहाँ परिवार का मार्गदर्शन सकारात्मक नहीं हो अर्थात नकारात्मक हो तो उसके सदस्य समस्याओं के भंवर में फंस जाते हैं और उन्नति के पथ से भटक कर स्वयं की ही हानि करते हैं।

परिवार में आपसी प्रेम, संयम, सहयोग एवं विश्वास अंकुरित पल्लवित एवं विकसित होता है। वहीं परिवार के बड़ों का संरक्षण एवं छोटों का सहारा परिवार को वट वृक्ष की तरह बनाता है। जिसकी छांव पर सभी सुरक्षित महसूस करते हैं। चाहे कितनी आँधी-तूफान आये वे इसे न तो डरा सकते हैं औ न डिगा सकते हैं। ऐसे परिवार की ओर कोई आँख उठाकर देख नहीं सकता। बल्की उस परिवार का सहयोग व समर्थन की अपेक्षा रखता है। आज लोकतंत्र में वोट का महत्व बढ़ गया है, यदि परिवार एकजुट हैं तो राजनैतिक शक्तियां भी ऐसे परिवार के समक्ष नतमस्तक नजर आती हैं।

कोरोना काल में गांव से शहर आकर मेहनत-मजदूरी करने वाले तथा शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों ने जब अपने गांव की ओर रुख किया तो उन्हें परिवार ने ही आश्रय दिया, आखिर भावनात्मक लगाव के कारण परिवार हमें विषम स्थिति में भी अपनाता है। मृत्यु या दुर्घटना होने पर एकमात्र सहारा परिवार ही होता है। यह है **परिवार की ताकत व प्रेम**। यदि आप अपनी जीविका के कारण परिवार से दूर रहते हैं तो वर्ष में 1-2 बार अवश्य परिवार के पास जायें तथा परिवार के सदस्यों से बच्चों सहित मिले व कुछ दिन अवश्य रहें। जब परिवार को आवश्यकता हो तो परिवार का साथ देवें। नई पीढ़ी को संस्कार परिवार से ही मिलते हैं। ''परिवार सुदृढ़ है तो प्रत्येक सदस्य आत्मविश्वास से लबालब रहता है। परिवार का महत्व व मिट्टी के मटके की कीमत इन्हें बनाने वाला ही जानता है, तोड़ने वाला नहीं।'' हमारा कर्तव्य है, हम इसे और मजबूती देवे।

राजस्थान में विशेष योग्यजन कल्याणार्थ संचालित प्रमुख योजनायें

1. पेंशन योजना :-

पात्रता- परिवार की वार्षिक आय ग्रामीण क्षेत्र में 48,000 रूपये तथा शहरी क्षेत्र में 60,000 रुपये।

परिलाभ- आयु 0 से 8 वर्ष तक की 250/- रूपये प्रतिमाह, आयु 8 से 75 वर्ष की तक 500/- रुपये प्रतिमाह एवं आयु 75 वर्ष से ऊपर होने पर 750/- रूपये प्रतिमाह पेंशन देय (01 जुलाई, 2017 से सभी उम्र के लाभार्थियों को 750/- रूपये प्रतिमाह)

2. छात्रवृत्ति योजना -

पात्रता- ऐसे छात्र जिनके परिवार की वार्षिक आय 2.00 लाख रुपये से कम हो को कक्षा एक से आठ तक छात्रवृत्ति देय है। दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग, सामाजिक न्याय एंव अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार द्वारा कक्षा 9 से कक्षा 10 तक के विधार्थियों, जिनके परिवार की आय 2.00 लाख रुपए तक हो एवं कक्षा 11 से डिप्लोमा/डिग्री लेवल तक के छात्र, जिनके परिवार की आय 2.50 लाख रुपए तक हो एवं उच्च शिक्षा हेतु अध्ययनरत छात्र-छात्राओं, जिनके परिवार की आय 6.09 लाख रुपए तक हो ऐसे छात्रो को छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

परिलाभ- नियमानुसार अनुरक्षण भत्ता एवं फीस का पुनर्भरण किया जाता है।

3. मुख्यमंत्री विशेष योग्यजन स्वरोजगार योजना-

पात्रता- विशेष योग्यजनों जिनकी आयु 18 से 55 वर्ष के बीच हो तथा जिनकी स्वयं की एवं परिवार की वार्षिक आय 2.00 लाख रुपये तक हो।

परिलाभ- स्वयं का स्वरोजगार प्रारम्भ करने के लिए 5.00 लाख रुपये ऋण के रूप में उपलब्ध करवाना जिस पर ऋण का 50 प्रतिशत (अधिकतम 50 हजार तक) अनुदान के रूप में देय है।

4. सुखद दाम्पत्य विवाह अनुदान योजना-

पात्रता-विशेष योग्यजन युवक/युवतियों को जिनके परिवार की वार्षिक आय 50000/- रूपये तक हो

परिलाभ -ऐसे युवक/युवतियों द्वारा विवाह करने पर रुपये 25,000/- प्रति दम्पत्ति आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाना बजट घोषणा वर्ष 2017-18 के तहत उक्त राशि को 25 हजार रुपए से बढ़ाकर 50 हजार रुपये किया गया जो दिनांक 22.05.2017 के बाद होने वाले विवाह के लिए प्रभावी है।

5. संयुक्त सहायता, कृत्रिम अंग/उपकरण हेतु अनुदान योजना-

पात्रता- विशेष योग्यजनों, जिनका परिवार आयकर दाता नहीं हो ।

परिलाभ-स्वरोजगार हेतु आर्थिक सहायता एवं शारीरिक कमी को पूर्ण करने हेतु कृत्रिम अंग/उपकरण के लिए रुपये 10,000 रुपए तक की आर्थिक सहायता उपलब्ध करवाना।

6. विशेष योग्यजन अनुप्रति योजना-

पात्रता- विशेष योग्यजन छात्र-छात्रायें जिनके परिवार की वार्षिक आय 2.00 लाख रूपये तक एवं संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित भारतीय सिविल सेवा परीक्षा एवं राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवा (सीधी भर्ती) संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा में उत्तीर्ण होने वाले अभ्यार्थी। राष्ट्रीय स्तर की सूचीबद्ध शैक्षणिक संस्थाओं तथा राज्य के राजकीय अभियांत्रिकी महाविधालय/ चिकित्सा महाविधालय में प्रवेश लेने पर।

परिलाभ- सिविल सेवा परीक्षा हेतु रुपये 1.00 लाख, राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवा (सीधी भर्ती) संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा हेतु 50 हजार रुपये तथा IIT, IIMS, राष्ट्रीय स्तर के मेडिकल कॉलेज इत्यादि शीर्ष शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेशित होने वाले अभ्यर्थियों को 50 हजार रुपये एवं राज्य के राजकीय इंजिनियरिंग कॉलेज एवं मेडिकल कॉलेजों में प्रवेशित होने वाले अभ्यर्थियों को 10 हजार रुपये प्रोत्साहन राशि देय है।

7. विशेष योग्यजन पालनहार योजना-

पात्रता- विशेष योग्यजन माता/ पिता के बच्चें, विशेष योग्यजन के परिवार का वार्षिक आय 1.20 लाख रुपये से अधिक नहीं हो।

परिलाभ- बच्चों को 0 से 6 वर्ष की आयु तक 500/- रूपये प्रतिमाह एवं 6 वर्ष से 18 वर्ष तक की आयु तक 1000/- रूपये प्रतिमाह अनुदान देय - बच्चे को दो वर्ष से पांच वर्ष की आयु के बीच आंगनबाड़ी/स्कूल जाना एवं 6 वर्ष की आयु के बाद विद्यालय में अध्ययनरत होना अनिवार्य।

8. आस्था योजना-

पात्रता-ऐसे परिवार जिनमें दो या दो से अधिक व्यक्तियों का के विशेष योग्यजन होना, तथा परिवार की वार्षिक आय 1.20 लाख रुपए हो, ऐसे परिवारों को आस्था कार्ड जारी किया जाना।

परिलाभ- आस्था कार्डधारी परिवार को सम्बन्धित विभाग द्वारा बी.पी.एल. के समकक्ष सुविधा उपलब्ध करवाना।

एक बार इंसान ने कोयल से कहा
''तू काली ना होती तो कितना अच्छी होती''
सागर से कहा
''तेरा पानी खरा ना होता तो कितना अच्छा होता''
गुलाब से कहा
''तुझमें काँटे ना होत तो कितना अच्छा होता''
तब तीनों एक साथ बोले
''हे इंसान अगर तुझमें दूसरों की कमियां देखने की आदत ना होती तो तू कितना अच्छा होता...''

''मुख्यमंत्री आपकी बेटी, हमारी बेटी'' योजना

हाल ही में राजस्थान सरकार द्वारा ''**मुख्यमंत्री आपकी बेटी, हमारी बेटी योजना**'' के तहत दी जाने वाली सहायता राशि में कुछ संशोधन किया है। अब सहायता राशि 1,000 रुपये और बढ़ा दी गई है। पहले कक्षा 1 से 8 वीं तक की बेटियों को 1,000 रुपये मिलते थे, परन्तु अब 2,100 रुपये मिलेंगें। वही कक्षा 9 वीं से 12 वीं तक की बेटियों को 1,500 रुपये मिलते थे, जो अब 2,500 रुपये हो गए है।

पात्रता- इस योजना के तहत आवेदन करने के लिए इच्छुक छात्रा के पास निम्नलिखित पात्रता/मानदंड होना आवश्यक है।

- यह योजना केवल गरीब परिवारों की लड़कियों के लिए ही है।
- छात्रा राजस्थान राज्य की मूल निवासी होनी चाहिए।
- इसके साथ ही छात्रा के माता-पिता में किसी एक का निधन हो गया हो।

आवश्यक दस्तावेज :-

1. अपनी एक पासपोर्ट साइज फोटो
2. बीपीएल राशन कार्ड
3. आधार कार्ड
4. बैंक अकाउंट पासबुक
5. गत वर्ष का परीक्षाफल आदि।

पात्र अभ्यर्थी जो गरीबी रेखा से नीचे (BPL) जीवन-यापन कर रहे हैं तथा उनके माता-पिता में किसी एक का निधन हो गया है। वह इस योजना के अंतर्गत आवेदन/पंजीकरण कर सकते हैं, उन्हें नीचे दिए गए ऑफलाइन प्रक्रिया का पालन करना होगा।

इसके साथ ही चुनावी ड्यूटी के दौरान यदि किसी मतदान कर्मियों की मृत्यु हो जाती है तो ऐसे परिवारों को दी जाने वाली राशि को 15 लाख रुपये से बढ़ाकर 20 लाख रुपये कर दी गयी है।

बारिश के मौसम में फॉलो करें ये डाइट प्लान

- इस मौसम में दाल, सब्जियां व कम वसा युक्त आहार खाएं।
- बरसात में नींबू की शिकंजी पीयें।
- घर पर हीसाफ-सुथरे तरीके से बनी चीजों को खाएं
- फलों को साबुत खाने के बजाए सलाद के रूप में लें।

आटा - साटा

आटा साटा अगर गलत है तो फिर सिर्फ सरकारी नौकरी देखकर अपनी बेटी की सगाई करना भी उससे कम गलत नहीं है । यह समाज को स्वीकार करना पड़ेगा अगर कोई समाज बंधु इसे स्वीकार नहीं करता तो आटा साटा पर ज्ञान पेलने का उसको कोई अधिकार नहीं है ! यह कोई अनिवार्य नहीं है की आटा साटा में लड़की को उससे दोगुनी उम्र के लड़के के साथ शादी की जाती है। दोगुनी उम्र के लड़के के साथ शादी करना आटा साटा की नहीं लड़की के घरवालों की गलती है जो आंखे होकर भी अंधे है । आटा साटा एक ऐसी प्रथा है जिसमे एक आदमी दूसरे की सहायता करता है, बाकी सोचने को कुछ भी सोच सकते है । मैंने तो आटा साटा खूब देखा पर आटा साटा से लड़कियां की बर्बाद होती जिंदगी नहीं देखी है । बाकी घरवाले इतने निकम्मे नहीं होते की अपनी बेटी को बर्बादी की तरफ धकेल देते है । कुछ लोग बोलते है कि पढो, लिखो, नौकरी लगो तो आटा साटा नहीं करना पड़ेगा, अरे सुनो ! हर एक की नौकरी लगेगी यह कहीं पर लिखा हुआ नहीं है और आज के समय में एक कहावत प्रचलित है या तो नौकरी या फिर छोकरी अगर आपके पास नौकरी है और आप कितने भी गये गुजरे है आपको लड़की मिल जायेगी और आपका पडोसी आपसे हजार गुना अच्छा है और उसके पास आपसे ज्यादा पैसे है और नौकरी और छोकरी दोनों नहीं है तो उसके लड़के को लड़की नहीं मिलेगी यह तय है । क्यों भाई, सिर्फ सरकारी नौकरी लगते ही उसके हजारों रिश्ते आने शुरू हो जाते है वो क्यों आते है किसी ने सोचा क्या ? और यह कोई गारंटी नहीं है की नौकरी वाले के साथ लड़की की शादी करेंगे तो लड़की सदा खुश रहेगी ! नौकरी वाला जब चाहे तब लड़की को छोड़ सकता है और तब यह आटा साटा पर ज्ञान देने वाले कुछ भी नहीं कर सकते ! आटा साटा या बिना नौकरी वाला लड़की को छोड़ने से पहले हजार बार सोचता है और बहुत कम छोड़ते है यह आप सबको पता है । सरकारी नौकरी वाला जब चाहे छोड़ सकता है क्योंकि उसको पता है की मुझे दूसरी मिल जायेगी और मिल भी जाती है । आटा साटा मेरी नजर मे कतई गलत नहीं है आपकी नजर में है तो मत करना । वास्तविकता यह है कि आटा साटा वाली लड़की का आदर सत्कार नौकरी वाले लड़के की पत्नी से हजार गुना ज्यादा होगा लेकिन इसका मतलब यह नही है कि एक नौकरी वाले को मैं गलत ठहरा रहा हूं । नौकरी के पीछे आई लड़की को कई ताने सुनने पड़ते है नौकरी थी तब तेरे बाप ने भेजा वरना पहले तो नहीं भेजा इत्यादि । आटा साटा पर ज्ञान देकर आटा साटा बंद नहीं किया जा सकता । हकीकत यह है कि अगर आपके बेटे की सरकारी नौकरी नहीं लगेगी तो आप खुद आटा साटा करोगे क्योंकि इसके अलावा कोई चारा ही नहीं है !

संकलनकर्ता

मुकेश कुमावत बोराज, जयपुर

गुरु के रहिये दास.....

पृष्ठ 18 से आगे ...

भगवान विष्णु जब यह बात कह रहे थे तब नारद जी बाहर ही खड़े थे। उन्होंने यह सब सुन लिया और वापस आकर भगवान विष्णु से पुछा कि भगवान जब मैं आया तो आपने मेरा खूब सम्मान किया लेकिन मेरे जाने के बाद आपने लक्ष्मी जी से मेरे बैठे हुए स्थान को गोबर से लीपने की वाली बात क्यों कही?

भगवान ने कहा- हे नारद मैंने आपका सम्मान इसलिए किया क्योंकि आप देव ऋषि है। इधर, आपके जाने के बाद मैंने देवी लक्ष्मी से ऐसा इसलिए कहा क्योंकि आपका कोई गुरु नहीं है, आप निगुरे हैं। जिस स्थान पर कोई निगुरा बैठ जाता है वो स्थान गंदा हो जाता है।

यह सुनकर नारद जी ने कहा, भगवान आपकी बात सत्य है पर में गुरु किसे बनाऊं? नारायण बोले, नारद आप धरती पर चले जाओ और जो सबसे पहला व्यक्ति मिले उसे अपना गुरु मान लेना।

नारद जी ने भगवान को प्रणाम किया और चले गए। इसके बाद नारद जी जब धरती पर पहुंचे तो उन्हें सबसे पहले एक मछली पकड़ने वाला मछुवारा मिला। नारद जी वापस नारायण के पास चले गए और उन्हें सारी बात बताई। उनकी बात सुनकर भगवान ने कहा कि हे नारद जी अपना प्रण पूरा करें, चाहे वह कोई भी हो, आपको अपना गुरु उस मछुआरे को ही बनाना पड़ेगा।

नारद जी दोबारा से धरती पर पहुंचे और उस मछुवारे से कहा गुरु बनने का अनुरोध किया। पहले तो मछुवारा नहीं माना, हालांकि बाद में काफी मनाने पर वह मान गया। मछुवारे को राजी करने के बाद नारद जी वापस भगवान विष्णु के पास गए और कहा कि भगवान मेरे गुरु जी को तो कुछ भी नहीं आता, वे मुझे क्या सिखाएंगे? गुरु की निंदा सुनकर विष्णुजी क्रोधित हो उठे और उन्होंने नारदजी को श्राप दे दिया कि आपको 84 लाख योनियों में घूमना पड़ेगा।

यह सुनकर नारद जी ने दोनों हाथ जोड़कर कहा- ''हे भगवान! इस श्राप से बचने का उपाय भी आप ही बताइये।'' भगवान विष्णु ने कहा कि इसका उपाय अपने गुरुदेव से पूछो। नारद जी ने सारी बात जाकर गुरुदेव को बताई और उसका उपाय जानना चाहा। नारद जी के गुरु बने उस मछुआरे ने कहा कि आप भगवान से कहना कि वे धरती पर 84 लाख योनियों की तस्वीरें बना दें और आप उस पर लेटकर गोल घूम लेना। उसके बाद जाकर भगवान विष्णु जी से कहना कि आपने उनका दिया श्राप पूरा किया अब वे आपको माफ करें। साथ ही वचन भी देना कि आगे से आप कभी भी गुरु की निंदा नहीं करोगे।

नारद जी ने विष्णु जी के पास जाकर ऐसा ही किया। भगवान ने नारद जी के अनुसार 84 लाख योनियों की तस्वीर धरती पर बना दी। नारद जी उन पर घूम लिए और अपने गुरु के कहे अनुसार भगवान से क्षमा मांगते हुए गुरु की निंदा न करने का वचन भी दिया। यह सुनकर विष्णु जी ने कहा कि देखा जिस गुरु की आप निंदा कर रहे थे उसी ने मेरे श्राप से आपको बचाने का रास्ता सुझाया। नारदजी, गुरु की महिमा अपरम्पार है।

गुरु गूंगे, गुरु बाबरे, गुरु के रहिये दास
गुरु जो भेजे नरक को, स्वर्ग कि रखिये आस।।

गुरु चाहे गूंगा हो, चाहे गुरु बाबरा हो (पागल हो) गुरु का हमेशा दास रहना चाहिए। गुरु यदि नरक को भेजे तब भी शिष्य को यह मानना चाहिए कि उसे स्वर्ग प्राप्त होगा। माना जाता है कि यदि शिष्य को गुरु पर पूर्ण विश्वास हो तो उसका बुरा स्वयं गुरु भी नहीं कर सकते।

- जयसिंह गुडीवाल, वरिष्ठ उपाध्यक्ष
कुमावत क्षत्रिय विकास समिति, बरकत नगर, जयपुर

हर्ष सतसई

-हरदान हर्ष

'दोहा' हिन्दी काव्य का बहुत ही लोकप्रिय लघु छंद है। इस छोटे से छंद के चार चरण में बड़ी से बड़ी बात कह देना 'गागर में सागर भर देना' जैसा कार्य है। मेरी मान्यता है कि दोहा ज्ञान का दोहन है। जैसे दही को मथते-मथते मक्खन निकलता है, उसी तरह सुविचारों के बाद एक दोहे की रचना होती है। आशा पाठकों को अवश्य पसन्द आयेंगे। मेरे कुछ दोहे-

मनवा कुछ ना कर सके, जब लगि भरे विकार।
मन तुरंग की साध से, सामर्थ भये अपार।।

मनुष्य में जब तक विकार भरे रहेंगे, वह कुछ भी नहीं कर सकता। जिसने अपने मन रूपी घोड़े को साध लिया है उसकी सामर्थ्य अपार हो जाती है।

प्यास बिना अमृत धरा, बिना भूख के भात।
बिना चाह के नेह ना, बिना नेह ना नात।।

बिना प्यास के अमृत और बिना भूख के भात रखा रह जाता है। उसी तरह बिना चाहत के प्रेम नहीं होता और बिना नेह के रिश्तों का कोई अर्थ नहीं रहता।

कुछ पल कोरी कल्पना दो दिन रहे फितूर।
पीढ़ी चलती धारणा, युग युग सच का नूर।।

कल्पनाएँ कुछ पल के लिए होती हैं। फितूर कुछ दिन रहते हैं और धारणाएँ पीढ़ी भर चलती हैं। परन्तु सच का आलोक तो युग-युगों तक रहता है।

मुख सामी गुड़ सा रहे, पीठ पिछाड़ी खार।
खारे पानी बुलबुले, मतलब की मनवार।।

जो व्यक्ति सामने होने पर अच्छी अच्छी बातें करता है और पीठ पीछे निंदा, आलोचना आदि करता है। ऐसे व्यक्ति की संगति से हमेशा निरर्थक बातें होती रहेंगी और वह केवल अपने स्वार्थ हेतु ही खुशामद करता है।

क्रमशः... आगामी अंक में

श्रीमद् भागवत पुराण

तद्वाग्विसर्गो जनताघविप्लवो यस्मिन्
प्रतिश्लोकमबद्धवत्यपि।
नामान्यनन्तस्य यशोऽङ्कितानि यत् शृण्वन्ति
गायन्ति गृणन्ति साधवः ॥ 11 ॥

महान चिन्तकों की विशेषता होती है कि वे बुरे से बुरे में से भी श्रेष्ठतम को खोज निकालते हैं। बुद्धिमान मनुष्य विष के कुण्ड से भी अमृत ग्रहण कर लेते है। गंदगी में भी पड़े सोने को स्वीकार किया जा सकता है। अज्ञात कुल में से भी उत्तम तथा सुयोग्य पत्नी तलाश की जा सकती है। अछूत कुल से सम्बद्ध सुयोग्य शिक्षक से भी सदुपदेश प्राप्त किया जा सकता है। ये कुछ नैतिक शिक्षाएँ हैं जो सभी स्थानों पर बिना किसी अपवाद के लागू होती हैं।

एक सन्त सामान्य व्यक्ति से काफी उच्च स्तर पर होता है। वह निरन्तर परमेश्वर के महिमा-गान में व्यस्त रहता है। क्योंकि परमेश्वर के पवित्र नाम तथा यश का प्रसार करने से जगत का दूषित वातावरण बदल सकता है और श्रीमद्भागवत जैसे दिव्य साहित्य के प्रसार से लोग अपने व्यवहारों में समझदार हो सकते हैं।

श्रीमद्भागवत के इस श्लोक की व्याख्या करते हुए हमारे समक्ष संकट उत्पन्न हो गया है। हमारे पड़ोसी मित्र चीन ने भारत की सीमा पर सैनिक आक्रमण कर दिया था। इसके पूर्व भी भारत तथा चीन थे और दोनों ही देश बिना किसी दुर्भावना के सदियों से शान्तिपूर्वक रहते रहे थे। इसका कारण यह था कि तब ईश्वर चेतना का वातावरण था और इस महिमंडल का प्रत्येक देश ईश्वर से डरता था, शुद्ध हृदय वाला तथा सरल था और राजनीतिक व कूटनीति का कोई प्रश्न ही न था। चीन तथा भारत ये दोनों देशों के बीच उस भूमि को लेकर झगड़ा करने का कोई कारण नहीं है, जो बसने के लिए उपयुक्त नहीं है और निश्चय ही इस मामले पर युद्ध करने की तो कोई आवश्यकता ही नहीं है। किन्तु कलह के युग कलि के कारण थोड़ी सी उत्तेजना से भी झगड़ा हो सकता है, जो किसी अन्य कारण से नहीं अपितु इस युग के प्रदूषित वातावरण के कारण है। एक वर्ग के लोग परमेश्वर के नाम तथा यशोगान को रोकने के लिए नियमबद्ध प्रचार कर रहे हैं। जबकि विश्वभर में श्रीमद्भागवत के सन्देश को प्रसारित करने की परम आवश्यकता है। प्रत्येक जिम्मेदार भारतीय नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह श्रीमद्भागवत के दिव्य संदेश को सर्वोपरि कल्याण तथा वांछित शान्ति लाने के लिए विश्व भर में प्रसारित करे। चूँकि भारत ने अपने इस उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य की उपेक्षा की है इसलिए सारे विश्व में संघर्ष हो रहा है तथा संकट छाया है। **हमारा विश्वास है कि यदि श्रीमद्भागवत का दिव्य संदेश विश्व के अग्रणी राजनीतिज्ञों व नेताओं तक ही पहुँच सके, तो निश्चित रूप से हृदय परिवर्तन होगा और वैश्विक वातावरण बदलेगा।** दिव्य संदेशों वाले इस महान ग्रंथ को प्रस्तुत करने का सद्प्रयास अनेक कठिनाइयों से भरा है। लेकिन हमारा विश्वास है कि इस विषय की गम्भीरता पर विचार किया जायेगा और समाज के नेता सर्वशक्तिमान भगवान् के महिमा गान करने के इस ईमानदार प्रयास के कारण इसको स्वीकार करेंगे। यह आध्यात्मिक मूल्यों से युक्त तकनीकी विज्ञान हैं, अतएव हमें तकनीक के विषय में चिन्तित होना है, भाषा के विषय में नहीं। यदि इस महान साहित्य की तकनीकों को विश्व के लोग समझ लें, तो उन्हें सफलता मिल सकती है।

जब विश्वभर की जनता में अनेकानेक भौतिकतावादी कार्य-कलाप चलते रहते हैं, तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि कोई व्यक्ति या राष्ट्र तनिक सी उत्तेजना पर किसी दुसरे व्यक्ति या राष्ट्र पर आक्रमण कर दे। इस कलि या कलह युग का यही नियम है। वातावरण पहले से सभी तरह के भ्रष्टाचार से प्रदूषित है और प्रत्येक व्यक्ति इससे भलीभाँति अवगत है। इन्द्रिय तृप्ति के भौतिकतावादी विचारों से पूर्ण न जाने कितना अवांछित साहित्य भरा पड़ा है। अनेक देशों में अश्लील साहित्य की जाँच करने तथा उस पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए सरकार द्वारा अनेक समितियाँ नियुक्त की जाती हैं। इसका अर्थ यही है कि न तो सरकार, न ही जिम्मेदार जन नेता ऐसा साहित्य चाहते हैं, तो भी यह बाजारों में मिलता है, क्योंकि लोग इन्द्रिय तुष्टि के लिए इसे चाहते हैं। सामान्य रूप से लोग कुछ पढ़ना चाहते हैं (यह प्राकृतिक प्रवृत्ति है), लेकिन चूँकि उनके मस्तिष्क दूषित हैं, अतएव वे ऐसा साहित्य पसन्द करते हैं। ऐसी परिस्थितियों में **श्रीमद्भागवत जैसे दिव्य साहित्य से न केवल सामान्य जनों के भ्रष्ट मन के कार्यकलाप घटेंगे, अपितु यह उनकी उस चाह को शमित करेगा जिसके लिए वे रोचक साहित्य पढ़ना चाहते हैं।** प्रारम्भ में, वे इसे पसन्द न भी करें, क्योंकि जिसे पीलिया हो जाता है वह मिश्री नहीं खाना चाहता, लेकिन हमें यह ज्ञात होना चाहिए कि मिश्री ही पीलिया का एक मात्र उपचार है। इसी प्रकार भगवद्गीता तथा श्रीमद्भागवत के पठन को लोकप्रिय बनाने का विधिवत् प्रचार कार्य होना चाहिए, क्योंकि यह इन्द्रियतृप्ति रूपी पीलिया के लिए मिश्री का काम करेगा। जब लोग इस साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न कर लेंगे, तो वह अन्य साहित्य, जो समाज में विष फैला रहा है, स्वतः ही समाप्त हो जायेगा।

अतः हमारा विश्वास है कि विश्व का मानव समाज श्रीमद्भागवत जैसे अद्वितीय ग्रंथ व उसकी शिक्षाओं का स्वागत करेगा जो जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में समाधानकारक है।

ग्रंथ के रचयिता महर्षि वेदव्यास थे, इसका लेखन भगवान गणेश ने महर्षि वेदव्यास से सुनकर किया था। यह हिन्दुओं के 18 पुराणों में से एक है। इसका मुख्य विषय भक्ति योग है। इसमें श्रीकृष्ण को सर्वोत्तम देव माना गया है।

वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/2 श्री नीरज धुन्धारिया, आनन्दपुरी, जयपुर
वि/3 श्री मनीष खोवाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
वि/4 श्री मनोज कुमार सिरसवा, जयपुर
वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टोंक रोड, जयपुर
वि/6 श्री यतेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
वि/7 श्री राकेश चन्द सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोदिया जयपुर
वि/10 श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल, जयपुर
वि/11 श्री नवल सरथल्या, महावीर नगर, जयपुर
वि/12 श्री पंकज कुमावत, वैरा झोटवाड़ा, जयपुर
वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
वि/14 श्री मनोज माचीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/15 श्री दीपक सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल, जयपुर
वि/17 श्री योगेश वर्मा, खड़गटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जयपुर
वि/20 श्री ओमकार मल घोड़ेला, रींगस रोड, जयपुर
वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/22 श्री रामप्रकाश बेरा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/23 श्री मोहनलाल घोड़ेला, नींदड़, जयपुर
वि/24 श्री कालूराम होदकास्या, नींदड़, जयपुर
वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, जोटवाड़ा, जयपुर
वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/28 श्री शंकरलाल मामोरिया, 22 गोदाम, जयपुर
वि/29 श्री रामस्वरूप खोराणिया, जयपुर
वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
वि/31 श्री चेनसुख बड़ीवाल, बगरू, जयपुर
वि/32 श्री चांदमल कुमावत (घोड़ेला), मुंबई
वि/33 श्री राजसिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर झोटवाड़ा
वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जयपुर
वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जयपुर
वि/38 श्री दया प्रकाश जलांधरा, इंदौर
वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौंरोदिया, इंदौर
वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
वि/41 श्री शिव भगवान चेजारा, सिरस्वा, सीकर
वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर

विशिष्ठ संरक्षक

वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल घोड़ेला, जयपुर
वि/46 श्री ललित स्वरूप पोडेला, जयपुर
वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर
वि/49 श्री मूलचंद खोवाल, जयपुर
वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, धुमुनिया, दुर्गापुरा, जयपुर
वि/51 श्री राजेंद्र जूनवाल टोंक फाटक, जयपुर
वि/52 श्री सतीश चंद खाटूवाल, जयपुर
वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
वि/55 श्री प्रमोद कुडावलिया, छत्तीसगढ़,
वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़
वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जयपुर
वि/58 श्री भीवाराम दम्बीवाल, निर्माण नगर, जयपुर
वि/59 श्री पन्नालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जयपुर
वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, बड़ीवाल, मुम्बई
वि/61 श्री हेमेंद्र सिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/62 श्री साधुलाल चेजारा (सिरस्वा), जयपुर
वि/63 श्री गोपाललाल बासनीवाल, जयपुर
वि/64 श्री मोहनलाल मामोड़िया, जयपुर
वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
वि/66 श्री जगदीश कुमावत
वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
वि/70 श्री नान्छीलाल कुद्दीवाल, जयपुर
वि/71 श्री रमेश चंद माचीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
वि/72 श्री राधेश्याम घासोलिया, दिल्ली
वि/73 श्री हंसराज मारवाल, ब्यावर
वि/74 श्री मेघराज सिरस्वा, छत्तीसगढ़
वि/75 श्री सूरजमल अनावड़िया, लाल कोठी, जयपुर
वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जयपुर
वि/77 श्री रामगोपाल खोराणिया, सोडाला, जयपुर
वि/78 श्री हरिशंकर राजौरा, जयपुर
वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
वि/81 श्री अर्जुन लाल धुन्धारिया, जयपुर
वि/82 श्री ओम प्रकाश धुन्धारिया, जयपुर
वि/83 श्री गोविंद नारायण तांगड़ा, जयपुर
वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जयपुर
वि/86 श्री मोहित धुन्धारिया, जयपुर
वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जयपुर
वि/89 श्री हेमांक खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर
वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की ढाणी, दूदू
वि/91 श्री लोकेश जंहाजपुरिया, नंदपुरी, जयपुर
वि/92 श्री नन्दकिशोर आसीवाल, रिंगस, सीकर
वि/93 श्री बाबूलाल धुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
वि/94 श्री रामसिंह बैथाड़िया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
वि/96 श्री नरेंद्र मामोडिया, अशोक नगर, उदयपुर
वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुमावत, जयपुर
वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर
वि/101 श्री दीपेश टी. मॅडावरा, जयपुर
वि/102 श्री राकेश कुमावत, बरकत नगर, जयपुर
वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जयपुर
वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याड़वाल, नई दिल्ली
वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/106 श्री राम प्रसाद छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/107 श्री गिरधारी लाल सिंघनवाल, उदयपुर
वि/108 श्री राकेश कुमावत (धनारिया), उदयपुर
वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याड़वाल), नई दिल्ली
वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
वि/111 डॉ. महेश कुमार जालवाल, जयपुर
वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदयपुर
वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोड़िया), जयपुर
वि/115 श्री जयकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
वि/116 श्री गजेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
वि/117 श्री सुनील तोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/119 श्री सुमित कुमार घोड़ेला, मुंबई
वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बैरा), झोटवाड़ा, जयपुर
वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
वि/123 श्री राजेश धूंधारिया, डूंडलोद कॉलोनी, जयपुर
वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
वि/125 श्री उम्मेद सिंह नन्दीवाल पुत्र श्री जी.एस. नन्दीवाल, जयपुर
वि/126 श्री रामलाल बैथाड़िया
वि/127 श्री लोकेन्द्र बालोदिया, जयपुर
वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर
वि/130 श्री दामोदर लाल जलान्दरा, जयपुर

''कुमावत इंडिया'' पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

22 जून श्री उमेश कुमावत पुत्र स्व. श्री सुवालाल जी मारवाल, धोली मंडी, चौमूं
23 जून श्री दिलीप कुमार पुत्र स्व. श्री गोवर्धन लाल सियोरिया, जयपुर
24 जून श्री रामलाल वर्मा पुत्र श्री गणेश लाल खण्डारिया, सी-सकीम, जयपुर
24 जून श्री गुरुबक्श दोराया पुत्र स्व. श्री सूजन जी, महेश कॉलोनी, जयपुर
25 जून श्री कमल कुमावत पुत्र स्व. राम प्रकाश गुड्डीवाल, जयपुर
28 जून श्रीमती गोपाली देवी धर्मपत्नी स्व. श्री नारायण जी भांडोरिया, जयपुर
29 जून श्री कृष्ण कुमार पुत्र स्व. ने नाथूलाल कण्डेरीवाल, हाथोज, जयपुर
30 जून श्री सीताराम जी बीवाल खोराश्यामदास, बदनपुरा, जयपुर
30 जून श्रीमती अंजू धर्मपत्नी श्री सुशील जेठीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
30 जून श्री राम निवास घोड़ेला, शाहपुरा, जयपुर
5 जुलाई श्री राजेन्द्र कुमार कैकट्या, चांदपोल बाजार, जयपुर
10 जुलाई श्री नरसिंह कुमावत से.नि. जेएलएन, अजमेर
12 जुलाई श्री मुकुट बिहारी पुत्र स्व. हनुमान प्रसाद जालवाल, खतीपुरा, जयपुर
12 जुलाई श्रीमती जमना देवी धर्मपत्नी स्व. श्री कन्हैयालाल जलान्दरा, जयपुर
17 जुलाई श्री श्यामलाल अजमेरा सांगानेर, जयपुर

प्राय: देखा गया है 40-50 प्रतिशत समाजबन्धु दैनिक भास्कर में तीये की सूचना प्रकाशित कराकर इति श्री कर देते हैं। जबकि राजस्थान पत्रिका भी प्रमुख समाचार-पत्र हैं। 40-50 प्रतिशत समाज बन्धु पत्रिका ही पढ़ते हैं। दोनों समाचार पत्र 30-40 प्रतिशत समाज बन्धु शायद पढ़ते होंगे। इस कारण सभी को किसी के स्वर्गवास होने का पता नहीं चलता। अत: समाज बन्धुओं से विनम्र निवेदन है कि दोनों समाचार पत्रों में प्रकाशित कराने का कष्ट करें।

हेमचन्द खड़गटा मो. 9351682036

[redacted]

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				सज़्पर्क सूत्र	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी	मो. नज़्बर	
प्रशांत	MBA Sangeet visarad	Self Institute	12.4.87	5'9''	अजमेरा	नीमीवाल	भोरोदिया	किरोड़ीवाल	9829447772	जयपुर
पकंज	B.Com.	Accounts	18.10.92	-	कुलचानिया	सिरसवा	घोड़ेला	वरथल्या	9887024140	जयपुर
जितेन्द्र	B.A.	Building material supplier	4.12.90	5'7''	दोराया	निरानिया	भोरोदिया	सिरोहिया	8302292579	जयपुर
पवन	B.Com.	Self Business	28 वर्ष	5'10''	देवतवाल	खोरानिया	उदयवाल	खोवाल	8824145610	जयपुर
विकास	B.A.	Self Business	15.11.98	5'9''	आसीवाल	बालोदिया	सिरस्वा	मारवाल	8432563460	सीकर
राहुल	B.Com.LLB	Advocate	1.05.95	5'5''	कुण्डलवाल	उदयवाल	देवतवाल	मारवाल	9928711015	ज्यावर
प्रभूदयाल	M.Com.	Accountants	30.7.90	5'10''	धुंधारिया	जालवाल	कारगवाल	लोहरवाडिया	9314005939	जयपुर
दीपेन्द्र	M.A. Banking	S.K. Finance (34800)	28.4.93	5'8''	कारगवाल	जालन्द्रा	किरोड़ीवाल	घोड़ेला	9414776717	सीकर
हीरालाल	M.Com.ABST	Accountant	5.5.94	5'9''	मारवाल	जलान्द्रा	बैथाड़िया	देवतवाल	7742209728	जयपुर
श्रीराम	M.A. Hindi	Factory Onwer	10.8.96	5'6''	बासनीवाल	बड़ीवाल	होदकास्या	देवतवाल	7742844005	सीकर
पुनीत	M.Com.,CA	LIC Housing finance	20.11.92	5'4''	माचीवाल	काज़्या	मनेठीवाल	मामोडिया	8107643148	जयपुर
शशि	10th	Sales man (15000)	6.2.92	5'5''	खण्डारिया	धमोनिया	मामोडिया	छिछोनिया	7976978433	जयपुर
आदित्य	M.Com.	Business	25.7.96	5'8''	धुंधारिया	जलान्दरा	मारवाल	आसीवाल	9414046265	जयपुर
सुनील	M.Com..	LDC (12000)	10.4.93	5'8''	भूरोदिया	किरोड़ीवाल	कुसुज़्बीवाल	जलान्दरा	8290991782	सांभर
जितेन्द्र	M.A.	Light Fitting	5.9.94	6'0''	नेमीवाल	मारवाल	कारगवाल	सिंगाठिया	8003205915	फुलेरा

[redacted]

नाम	शिक्षा	व्यवसाय	जन्म	ऊंचाई	गौत्र				सज़्पर्क सूत्र	स्थान
					स्वयं	माता	दादी	नानी	मो. नज़्बर	
सीमा	M.A.	-	3.9.98	5'2''	बहरा	छापोला	धमुनिया	नागा	9950150318	जयपुर
मोनिका	M.SC	-	22.2.96	5'2''	बासोड़ा	उदयवाल	बत्रा		9928291666	भीलवाड़ा
हिमांशी	ITI, M.A.	-	30.7.2000	5'3''	तुनगरिया	दोराया	देवतवाल	घोड़ेला	9602755572	जयपुर
राजबाला	M.Com. B.Ed.	प्रतियोगिता	24.1.95	5'3''	राहोरिया	उदयवाल	घोड़ेला	सिरस्वा	9166815540	किशनगढ़
काजल	M.Com.	-	23.4.96	5'2''	जलान्दरा	धुंधारिया	बेरा	कारगवाल	9828118789	जयपुर
पायल	B.Sc.	Teacher	28.7.98	5'0''	घटेलवाल	घोड़ेला	भाटीवाल	छापोला	8949199547	झुंझुनूं
चंचल	M.A.,Bed.	-	3.1.94	5'4''	गैदर	बारावाल	राजोरिया	मामोडिया	9829190386	जयपुर
अपूर्वा	B.Tech (Fashion design)	-	25.8.96	5'4''	बघानिया	राजोरिया	सारड़ीवाल	हीरापुरिया	9784086370	जयपुर
हिमानी	M.A. (मांगलिक)	-	13.8.96	5'3''	बसवाल	जलमिया	कारगवाल	देवतवाल	9799981123	आबूरोड
अंतिमबाला	MPED	Central Govt. Employ	17.793	5'4''	मारू	रेनवाल	भडारा	सिद्ध	9977137123	म.प्र.
प्रतिभा	B.A.	-	15.10.2001	5'4''	किरोड़ीवाल	गुबगनवाल	बैथाड़िया	दज़्बीवाल	8290503105	पाली
दिव्या	B.Tech (CS)	-	29.6.91	5'3''	भोरोदिया	छाबल्या	खूखवाल	खटवाल	8974992776	जयपुर
स्वाती	M.Com.	Junior Account (Govt)	26.4.92	5'5''	घोड़ेला	बालोदिया	पारमवाल	नोखवाल	9001191073	जयपुर
सोनल	M.Com., CS	-	4.4.93	5'5''	मावर	किरोड़ीवाल	बेडवाल	माचीवाल	7999823948	
हर्शिता	B.Sc., B.Ed.	-	18.2.2000	5'7''	लोइचा	लोईचा	अनावड़िया	टांक	9413584711	प्रतापगढ़
प्रियंका	M.A.	-	1.7.96	5'4''	इटाडा	मनडोवरा	लाज़्बा	बारावाल	7339758327	अजमेर

नोट : 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम "कुमावत इंडिया पत्रिका"

समाज बन्धुओं से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशन हेतु यदि आप प्रकाशन सामग्रीः- समाचार, फोटो, लेख, कविता, प्रतिभाओं का परिचय, सामाजिक गतिविधियों आदि प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो कृपया kumawatindiapatrika@gmail.com पर मेल करें अथवा कार्यालय पते पर सामग्री प्रेषित करें।

-सम्पादक

पूर्वजों की याद को संजोये रखे

विनम्र निवेदन

हमारे पूर्वज जमीन, जायदाद, सोना, चांदी आदि अमूल्य सम्पत्ति छोड़कर स्वर्ग चले जाते हैं। हम व्यस्तता के कारण उनकी चिरस्मृति बनाये रखने में असमर्थ हो जाते हैं। कुमावत इण्डिया पत्रिका समाज बन्धु 4000 रु. शुल्क जमा कराकर अपने पूर्वज (माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी) की पुण्य तिथि फोटो सहित 10 वर्ष तक 1/8 पेज पर मल्टीकलर में प्रकाशित करा सकते हैं। - सचिव

[redacted]

'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।

■ किसी भी लेखन सामग्री या उसके किसी भाग के लिए प्रकाशन से 2 माह बाद कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

[redacted]

[redacted]

तीन वर्षीय सदस्य मार्च 2021 तक क्र.सं. 1 से 340 तक की सदस्यता समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें। सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टों को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

जयपुर :

1. **लालकोठी बापूनगर**-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. **शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. **कुमावत कॉलोनी झोटवाड़ा**- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. **जयपुर शहर**-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. **सांगानेर**-श्री भीमसिंह सिरोहिया, मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. **मालवीयनगर**-श्रीचन्द्रप्रकाश अजमेरा मो. 9928088815
7. **22 गोदाम**-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं. 4 मो. 9414052736
8. **आदर्श नगर, तिलक नगर**-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. **दहमी कलां, बगरू**-श्री चेनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. **करधनी-कालवाड़ रोड**-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड रोड, मो. 9828063267
11. **टोंक फाटक**- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. **बरकत नगर-महेश नगर**-श्री विशाल कम्प्यूटर्स, बरकत नगर महेश नगर फाटक के पास, जयपुर, मो. 94613-43432

ब्यावर-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493

दिल्ली-श्री राधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580

फुलेरा-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास

नोट : अन्य समाज बन्धु स्वेच्छा से यह सेवा देना चाहें तो कार्यालय से सम्पर्क करें।

चित्रकार महेश कुमावत राज्य कला पुरस्कार से सम्मानित

राजस्थान ललित कला अकादमी की 40वीं छात्र कला प्रदर्शनी (वर्चुअल) में 221 विद्यार्थियों की 555 कलाकृतियां प्राप्त हुई थीं जिसमें से प्रदेश के 10 चित्रकारों की कलाकृतियों को चुना गया। युवा चित्रकार श्री महेश कुमावत निवासी नावां की संसार पेंटिंग को राज्य कला पुरस्कार के लिए चुना गया। माननीय कला एवं संस्कृति मंत्री श्री बी.डी. कल्ला, मुख्य अतिथि द्वारा विजेताओं को सम्मानित किया गया। दीपा कुमावत को भी इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया। सभी चयनित कलाकारों को 10-10 हजार का पुरस्कार दिया गया तथा स्मृति चिह्न एवं प्रमाण पत्र भी बाद में दिया जाएगा। श्री महेश कुमावत द्वारा अपने चित्रों में सांस्कारिक जीवन को अलग प्रकार से दर्शाया है।

बेझड़ संसार

तहसीलदार चोरमा ने की अपने पसिर में सफाई

राजस्व विभाग के आवासीय परिसर में एक अद्भुत नजारा देखकर राहगीर कुछसमय के लिए ठिठग गए। दरअसल इस आवासीय परिसर में पिछले कई दिनों से खुले स्थान पर गाजर घास ने कब्जा कर रखा था। जिले में ताप्ती जन्मोत्सव के स्थानीय अवकाश के कारण अपने प्रशासनिक दायित्व से मुक्त तहसीलदार ओमप्रकाश चोरमा ने अपने इस आवासीय परिसर में स्वयं ही गाजर घास साफ करने का बीड़ा उठाया और अपने कंधों पर स्प्रे पंप टांग कर परिसर को पूरे गाजर घास पर स्प्रे कर दिया। यह नजारा देखकर पहले तो लोगों को विश्वास ही नहीं हुआ कि चिचोली तहसीलदार ओमप्रकाश चोरमा स्वयं ही इस काम में लगे हुए हैं। चर्चा में उन्होंने बताया कि शासकीय कार्य से अवकाश के कारण उन्होंने अपने फुर्सत के लम्हों में पर्यावरण स्वच्छता का बड़ा उठाया और अपने परिसर की साफ सफाई कर दी।

श्री प्रभू नारायण भौरोदिया-श्रीमती मैना देवी

के विवाह के 60 वर्ष पूर्ण होने पर

हार्दिक बधाई

शुभेच्छु

राजेन्द्र कुमावत-संगीता कुमावत, महेन्द्र कुमावत-पवित्रा कुमावत

(पुत्र-पुत्रवधू), रोहित, चित्रांश, आर्यन, ज्योति (पौत्र-पौत्री)

BHORODIYA BUILDING MATERIAL SUPPLIERS

e-mail : bhorodiyabuilding@rediffmail.com

Cement Artical Manufecturer & Supplier

Ceramic Tiles & Sanitary Items Supplier

Building Material Supplier

विज्ञापन

Plot No. 6, Ashok Nagar, Purani Chungi Ke Pass, Ajmer Road, Jaipur-302019 M. 9351535650, 9982282999, 9828541138

विभिन्न पदों पर चयनित /नियुक्त/मनोनीत/सफल समाजजनों को कुमावत इंडियपत्रिका की ओर से हार्दिक बधाई

अशोक कुमावत
मंडाई
RASमें चयनित

अमन कुमावत
गोविन्दगढ़, अजमेर
RASमें चयनित

राजेन्द्र लकेसर
रामगढ़
RAS 37वीं रैंक

मनीष कुमावत
RAS 550वी रैंक

दीपक कुमावत
पुत्र हनुमाना राम कुमावत
RAS702 रैंक

रामावतार कुमावत
RAS को एसीबी में
डिप्टी डाइरेक्टर

भगवान लाल कुमावत
डॉक्टर बनने पर

नीतू कुमावत
MBBS में चयनित

नवल कुमावत
पुत्र रामदयाल देवतवाल
डाक्टर पशु विभाग

आशुतोष कुमावत
राष्ट्रीय अध्यक्ष
भारतीय हैंडबॉल संघ

प्रेम कुमार ब्रांड एम्बेस्डर
सामाजिक न्याय
एवं अधिकारिता विभाग

श्रद्धांजलि

निर्वाण तिथि 12.7.2019

हमारे प्रिय

डॉ. एन.के. कुमावत (घोड़ेला)

(संस्थापक एन.के. डेन्टल हॉस्पिटल)

की द्वितीय पुण्य तिथि 12 जुलाई, 2021

हम सभी परिवारजन अश्रुपूरित नेत्रों
से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

आपकी सादगी, आदर्श एवं त्यागमय जीवन
हमारे लिये सदैव प्रेरणास्त्रोत बने रहेंगे।

विज्ञापन

श्रद्धावनत

माता-पिता : श्रीमती मनोहर देवी-डॉ. आर.एल. वर्मा, धर्म पत्नी : डॉ. रजनी, पुत्र : डॉ. क्षितिज पुत्री : डॉ. सृष्टी, भ्राता-भ्राता बहु : चितरंजन-उर्मिला, भतीजे: तरुण, कुशल, बहन-बहनोई : श्रीमती गायत्री-मिलिन्द नाईक (पूना), डॉ. हेमा-नरेश (मारवाल)

प्रतिष्ठान

एन.के. डेन्टल हॉस्पिटल
एपेक्स मॉल लालकोठी, जयपुर-0141-2741071

ब्रांच : **एन.के. डेन्टल हॉस्पिटल,**
पर्ललेन आदिनाथ नगर, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर मो. 9602888999

श्रद्धांजलि

हमारे प्रिय

डॉ. एन.के. कुमावत (घोड़ेला)

(संस्थापक एन.के. डेन्टल हॉस्पिटल)

की द्वितीय पुण्य तिथि 12 जुलाई, 2021

हम सभी परिवारजन अश्रुपूरित नेत्रों
से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

आपके स्मरण में

श्रद्धावनत

सास : श्रीमती गायत्री (धर्मपत्नी स्व. श्री गुलाब चन्द्र बालोदिया)

साला सहलज : गजेन्द्र-गरिमा, लोकेन्द्र-हनिता बालोदिया

निवास स्थान : A-I, किसान मार्ग, बरकत नगर, जयपुर

मोबाईल नं. : 9829212772, 9829009036

श्रद्धांजलि

षष्ठम् पुण्यतिथि

दिनांक : 3 सितम्बर 2021

स्व. श्रीमती शारदा देवी

हम सब परिवारजन सजल नयनों
से सहृदय श्रद्धा सुमनांजलि अर्पित
करते हैं।

स्व. 3 सितम्बर 2015 श्रद्धावन्त

पति : श्री शंकरलाल खण्डारिया

पुत्र-पुत्रवधु : राजेश-उमेश देवी, सुरेश-शशि देवी, शेखर-सुनीता देवी,

पुत्री-दामाद : मंजूदेवी - जोगेन्द्र जी

पौत्र-पौत्रवधु : ऋतुराज - योगिता, पौत्र : योगेश, हिमांशु,

पौत्री-पौत्री दामाद : ज्योति - रामकिशन जी,

पौत्री : हेमलता, चित्रा, जया, दीपिका, प्राची

एवं समस्त खण्डारिया परिवार

फर्म : -

1. **शारदा डेंटिंग पेंटिंग, ढ़ेहर के बालाजी**
   ▪ 9314241884 ▪ 8619022198 ▪ 9314135525
2. **साई तीर्थ यात्रा सेवा समिति , पटेल कॉलोनी** ▪ 8619022198

निवास : 36, पटेल कॉलोनी, गवर्मेंट प्रेस के सामने, सी स्कीम, जयपुर (राज)

श्रद्धापूर्ण पुण्यतिथि

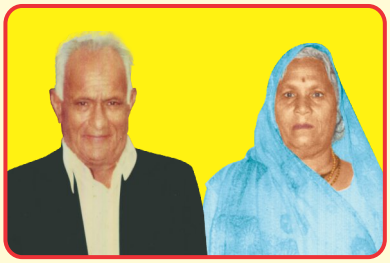

स्व. 09-07-1987 स्व. 21-06-1990

34वीं पुण्यतिथि
स्व. श्री रामसहाय जी वर्मा
मुम्बई

31वीं पुण्यतिथि
स्व. श्रीमती दुर्गा देवी वर्मा
मुम्बई

आपकी कर्म – प्रेरणा ही हमारे जीवन की अमूल्य सम्पत्ति हैं
आपके आशीर्वाद से ही आने वाली पीढ़ी को भी
आपकी तरह गतिशील बनाने में प्रयासरत् रहेगें।

आपके स्मरण में

शशीकुमार वर्मा – इन्द्रा वर्मा (पुत्र – पुत्र वधु)
विजय वर्मा – मनीषा वर्मा (पौत्र – पौत्र वधु)
अंजू वर्मा – नवीन जी वर्मा (पौत्री – पौत्री दामाद)
अर्चना वर्मा – योगेश जी वर्मा (पौत्री – पौत्री दामाद)
आरव एवं ईशान (पड़ पौत्र) एवं समस्त सिरसवा परिवार (मुम्बई-इन्दौर)

भावपूर्ण पुण्यतिथि

स्व. 15-07-1972 स्व. 23-06-2007

49वीं पुण्यतिथि
स्व. श्री रामसहाय जी देवत
इन्दौर

14वीं पुण्यतिथि
स्व. श्रीमती संज्या देवी देवत (अम्मा)
इन्दौर

मुझे गर्व है, कि भगवान श्रीराम और सीतामाता के समान
नाना–नानी का मैं दोहित्र हूँ आपके रामायण समान जीवन – ग्रंथ का
असली ज्ञान ही मेरे द्वारा अर्जित की गई शिक्षा और पूँजी है।
सदैव आपका नाम उजागर रखने में प्रयासरत् रहूँगा।

आपका दोहित्र

विजय शशी कुमार वर्मा

सुपुत्री एवं दामाद – विमल – बाबूलाल वर्मा,
कु. चन्द्रा आर. देवत, इन्द्रा – शशि कुमार वर्मा
आरव एवं ईशान (पड़ दोहित्र)

शशी कुमार वार्मा मो. 9179261748, विजय वर्मा 9167516693

अभिनंदन

संग

रेणुका

के विवाह

18 जुलाई 2021 के

शुभ अवसर पर

हार्दिक बधाई।

शुभेच्छु

श्रीमती विद्या-भवानी शंकर तोंदवाल (दादी-दादाजी)

श्रीमती भारती तोंदवाल-रमेश तोंदवाल (माता-पिता), कीर्ति-आभास (भाभी-भ्राता)

श्रीमती मंजू-गिरीश नीमीवाल (सास-श्वसुर) एवं समस्त तोंदवाल परिवार

60, जय जवान कॉलोनी-द्वितीय, टोंक रोड, जयपुर

Director
Mukesh Kumawat
93146-07695

Managing Director
C.M. Kumawat
98290-56063

Director
Lokesh Kumawat
97837-83123

CMT ARTS INDIA PVT LTD.

MANUFACTURER, EXPORTER, IMPORTER & WHOLESALER OF
All kind of : HANDICRAFT, GIFT AND SOUVENIR

Since 1976

Speciality :

1. Cedar Wood/ Kadamba wood with fine carving and half antique.
2. Sandalwood artifacts 3. Brass metal with turquoise work and Antique finish
4. Marble with painted & embossed art 5. Cultured marble 6. Soft stone 7. Miniature Art

Showroom :
"Sai-Villa", Plot No. 39, Mission Compound,
C-Scheme, Near Ajmer Puliya (Bridge)
Jaipur 302 001 (Raj.) Tel: +91-141-4041561

Residence :
F-31/A, Lal Bhadhur Nagar (W),
S.L. Marg, Main Road, Durgapura,
Tonk Road, Jaipur - 302018 (Raj.)

Email: cmtartsindia@gmail.com

Website : www.sandalwood.cn.com

Shubh Laxmi Crane & Engineers

(Formally Know as Shri Laxmi Crane Service)

All India Equipments Rental Service Provider

Jai Kishan Kumawat
+91- 9829125428
+91- 9887011175

Shankar Lal Kumawat
+91- 9887227775

Mukesh Kumar Kumawat
+91- 9887337775

H.O.
Shree Heera Bhawan, Dholi Mandi
Chomu-303702 Distt. Jaipur (Rajasthan)

B.O.
Near Patwar Bhawan,Village - Kawas
Distt. Barmer - 344035 (Rajasthan)

shreelaxmicranes@gmail.com
shubhlaxmicrane@gmail.com

www : shrilaxmicrane.com

Graphic By : Art point # 9928064300

RNI - RAJHIN/2017/74285

प्रेषक: कुमावत इंडिया पत्रिका
एफ 31/ए, एस. एल. मार्ग,
लाल बहादुर नगर-ब., दुर्गापुरा, जयपुर - 302018